केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ अक्तूबर २०११, वर्ष १८, नं ५८, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४

सोनिया गान्धी जी सत्य और अहिंसा के मार्ग में

Kinfra
INSPIRING GROWTH

EVERYTHING AT ONE PLACE

For 16 industry-friendly years, Kerala Industrial Infrastructure Development Corporation (KINFRA) has endeavoured to provide perfect settings to help businesses flourish in Kerala. KINFRA provides a wide variety of Walk-In-And-Manufacture Parks for setting up industries across Kerala. 20 different sector specific industrial parks are developed by identifying and promoting core competency of each region. Navaratna Companies like HAL, BEL and BEML, as well as private entrepreneurs have benefited from setting up their units in our parks.

Key Sectors

Food Processing | Apparel/Textiles | Knowledge-based industries | Rubber | Seafood
Entertainment/Animation & Graming | IT/IIES Hardware & Electronics | Bio-technology

Kerala Industrial Infrastructure Development Corporation
(A statutory body of Govt. of Kerala)
KINFRA House T.C.31/2312 Sasthamangalam, Thiruvananthapuram 695 010, Kerala, India.
Phone : 0471-2726585, Fax: 0471-2724773 E-mail:kinfra@vsnl.com, www.kinfra.com

Kinfra
INSPIRING GROWH

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ अक्तूबर २०११ अंक, वर्ष १८, नं ५८, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४

सम्पादक

डा० एन० चन्द्रशेखर नायर

संरक्षक

श्रीमती शांता बाई (बेंगलोर)
श्री. डी.शशांकन नायर
श्रीमती कमला पद्मगिरीश्वरन
डा० वीरेन्द्र शर्मा (दिल्ली)
डा० अमर सिंह वधान (पंजाब)
श्री. हरिहरलाल श्रीवास्तव (काशी)
श्रीमती के. तुलसी देवी (चेन्नै)

परामर्श-मण्डल

डा० एस.तंकमणि अम्मा
डा० मणिकण्डन नायर
डा० पी.लता
श्रीमती आर. राजपुष्पम
श्रीमती एल. कौसल्या अम्माल
श्रीमती रमा उण्णित्तान

सम्पादकीय कार्यालय

श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
पट्टम पालस पोस्ट
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४
दूरभाष-०४७१-२५४१३५५

प्रकाशकीय कार्यालय

मुद्रित : (द्वारा)
श्रीरामदास मिशन मुद्रणालय,
चेंकोट्टकोणम, तिरुवनन्तपुरम-८७
मूल्य-एक प्रति: २०.०० रुपये
आजीवन सदस्यता : १०००.००
संरक्षक : २०००.००

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका कहाँ कहाँ जाती है?

कन्याकुमारी, मैसूर-२, महाराष्ट्रा, मणिपुर, मद्रास-६, कलक्कता-२, नई दिल्ली (अनेक स्थान), गुन्डूर, त्रिवेन्द्रम (अनेक जगहें), बागपत (यु.पी.) उन्नाव (उ.प्र.), बिलासपुर (म.प्र.), गुंतकल, जबलपुर, इलहाबाद, अहमदाबाद, बिरख्रडी, जमशेदपुर, लातूर, हैदराबाद, रतलाम, देवरिया, गाजियाबाद, इम्फाल, चुडीबाज़ार, पीली भीत, फिरोजाबाद, अम्बाला, लख्रनऊ, बलांगीर, बिहार, पटना, गया, बांका, ग्वालियर, भगलपुर, देवधर, जयपुर, बनारस, तृशूर, आलप्पुषा, मेरठ केन्ट, कानपुर, उज्जैन, पानीपत, होरंगाबाद, सीतामठी पोस्ट, प्रतापगढ, सरगुजा, बिजनौर, भीलवाडा, सतना, रेलमंत्रालय, तिरुवल्ला, वर्कला, कोट्टयम, नई माही, ओट्टप्पालम, चेप्पाड, लक्किडि, नेय्याट्टिनकरा, कोषिकोड, पय्यन्नूर, कोल्लम, मान्नार, मंगलोर, पुरनपुर, पंजाब, विशाख्रपटनम

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा निर्देशित जगहें :

तमिल नाडु:- अरुम्बाक्कम, तोरापक्काओ, मद्रास, चेन्नै-३२, क्रोमोपेट्टा, चेन्नै-२१, चेन्नै-२, चेन्नै-८, कान्चीपुरम, तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली-२, नोर्त अरकोट, ताम्बरम, कोयम्बतूर, सेलम, सेलम-२६, चेन्नै-३४, चेन्नै-२४, तिरुचिरापल्ली-२, चेन्नै-३०, कोयम्बतूर-४, चेन्नै-२८, चेन्नै-८६। **गुजरात:-** अहमदाबाद, बरोडा। **कर्नाटक:-** बांगलोर, चित्रदुर्ग, श्रीनिगेरी, मौंगलोर, मैसूर, हस्सन, मान्डीया, चिगमौंगलोर, षिमोगा, तुमकूर, कोलार। **महाराष्ट्रा:- मुम्बई,** कोलाबा-मुम्बई, मुम्बई-२०२, माटुंगा, मुम्बई-८, मुम्बई-८६, अन्देरी-६९, मुम्बई-२६, मुम्बई-८७, मुम्बई-२, औरंडगाबाद-३, औरंडगाबाद-२, औरंडगाबाद-१, नागपुर, रामटाक-नागपुर, सताना, नन्दगौन-नासिक, पूना, पूना-१, पूना-४, मानमाड-नासिक, चन्द्रपुर, अमरावती, कन्डहार, कोलहापुर, बानडरा, अकोला, नासिक, अहमदनगर, जलगौन, दुलिया, सांगली-कोलहापुर, षोलापुर, सतारा, सान्ताक्रूस, बारसी-४१३, माटुंगा, संगली-४१६। **वेस्ट बंगाल:-** कलक्कत्ता। **हैदराबाद:-** सुल्तान बाज़ार। **गौहाटी:-** कानपुरा। **नई दिल्ली:-** आर, के पुरम। गोवा:- मपुसा-५०७।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। सम्पादक

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका केरल विश्व विद्यालय से अनुमोदित पत्रिकाओं की सूची में शामिल की गयी है। (संपादक)

www.hindisahityaacademy.com

सम्पादकीय

केरल सरकार हड्ताल और बंद के कारण परेशान!! कैसे मुक्ति हो?

सरकार और राजनीति का प्रश्न है। प्रतिपक्ष का कर्तव्य है कि सरकार के गलत एवं अनियमानुकूल निर्णयों का खण्डन करे और उसे हटाने का जमकर प्रयत्न करें। ऐसा करना उनका दायित्व है। मतदाताओं के प्रति, अपने देश के प्रति तभी वह उत्तरदायी रह सकता है। विपक्षी दलों का उतना ही दायित्व शासन कार्य में करारी हो, जितना शासक दलों का। लोकतंत्र शासन कभी दलीय शासन न हो। अगर दलीय शासन अपने दल का ध्यान ही करे तो देश के ४९ प्रतिशत लोगों का शासन नहीं चलता। इसे लोकतंत्र शासन नहीं माना जा सकता। उपर्युक्त बुनियादी कानून की बाध्यता दोनों पक्षों के लिए अनिवार्य रूप से स्वीकार्य हो, तभी जनता शांति का अनुभव कर सकती है। देश में हर प्रकार की श्रीवृद्धि का संभव होना तभी महसूस होता है। आज जीवन में शांति के विपरीत वातावरणों का अवसर जो बढ़ता जा रहा है वह स्वाभाविक जैसा दिखाई पड़ता है। अनुभव से, महान व्यक्तियों की उक्ति से यह सत्य स्थापित हुआ है कि संयम ही स्वातंत्र्य है। सच तो है कि जहाँ संयम नहीं है वहाँ हर तरह की स्वस्थता नष्ट हो जाती है। जहां स्वश्थ वातावण नहीं है वहाँ सारा जीवन दूभर हो जाता है। केरल जब से लोकतंत्र शासन स्थापित हुआ तब से राजनैतिक दलों के बीच में सौमनस्य का वातावरण बिरले ही हुआ। विपक्ष का लक्ष्य शासन करने का है। इस दृष्टि से हमेशा सरकार के विरुद्ध आरोपण एवं अन्याय की बुलंद कारवाईयाँ करते हैं। इस प्रकार कार्रवइयों से जनता का जीवन भी दूभर हो जाता है। और अनेक दिनों का बरबाद सा होना स्वाभाविक होता है। बंद और हड्ताल से सारा शहर कोलाहलमय है। शहर में जीवित जन बाहर निकल नहीं सकते। शहर की दूकानें, बड़े-बड़े व्यापारी मकान, कार्यालयों में दलीय संघर्ष और रास्ते में टी.एरग्यास, गोली, खून का बहना, निरंतर नियम सा चलता है। करोड़ों रुपयों का नाश हो जाता है। करोड़ों अफरों और नौकरों का काम नष्ट हो जाता है। रोगियों को अस्पताल पहुँचना संभव नहीं होता और रास्ते में जीवन होम कर देना पड़ता है। विदूरस्थ देशों में काम करनेवाले लोगों को हवाई जहाज से जाने में बाधा पड़ती है और उनकी नौकरी नष्ट हो जाती है। विद्यार्थियों का राजनैतिक कलाप भी कभी कभी आक्रमण के रास्ते से चलता है। उन्हें मारक शारीरिक क्लेश सहना पड़ता है। मृत्यू भी साधारण जैसी हो गयी है।

उपर्युक्त अरोचक तथा बरबर अवस्था से कैसे मुक्ति संभव है? यही इस सन्दर्भ में यहाँ इंगित किया जाता है। यदि बंद अथवा हड़ताल से सरकारी और आम जनता का या वस्तुओं का नष्ट अथवा नाश होता है तो उसकी क्षतिपूर्ति करने का दायित्व उस राजनैतिक दल अथवा छात्र दल का है, जो हड़ताल घोषित करता है। उनके विध्वंसन का प्रतिरोध सरकार न करें। टियर ग्यास, गोली, लाती प्रयोग से दूर रहें और मात्र फोटो लेने की व्यवस्था हो। प्रतिरोध का प्रयोग न करने से आगे के बदले कलाप की अपेक्षा नहीं रहेगी। वहीं बदलाव एवं प्रतिकार का अंत हो जाता है। न्यायालय एवं सरकारी निरीक्षकों एवं एक पूर्व गढ़ित शांतिमार्गी समिति के द्वारा हड़ताल व बंद के कारणभूत दलों के द्वारा हुए नाश का नष्टपरिहार 'कोम्पनशेषनन' वसूल किया जाय। ऐसा एक ठोस कानून यदि ज़रूरी हो तो बनाया जाय और न्यायालय द्वारा उसे पारित किया जाय। स्मरण है एक कानून इससे मिलते-जुलते कार्यों का बना था। पर कारगर नहीं रहा वह। यदि इस नये कदम पर विद्वानों एवं सारकार तथा नियमज्ञों की चर्चा होगी तो भविष्य में अनावश्यक बंद अथवा खून ख़राबी नहीं चलेगी।

डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर

ഹർത്താലും ബന്ദും തുടർന്നുള്ള കലാപങ്ങളിൽ നിന്നും നഷ്ടങ്ങളിൽ നിന്നും എങ്ങനെ മോചനം നേടാം?

ഹർത്താലും ബന്ദും മുഖേന ഉണ്ടാവുന്ന നഷ്ടങ്ങൾ നികത്താൻ നിയമം ഉണ്ടാക്കേണ്ടിവരും. അതുണ്ടാക്കുന്നവർ തന്നെയാണ് ബാദ്ധ്യസ്ഥർ. എന്നാൽ നിയമപാലകർ അതിനെ നേരിടേണ്ടത് സമചിത്തതയോടെ വേണം. ടിയർഗ്യാസ്, ലാത്തി, വെടി ഇതൊന്നും സർക്കാറിന്റെ ഭാഗത്തുനിന്നും ഉണ്ടാവാൻ പാടില്ല. ഇതൊന്നും ചെയ്യാതെ പോലീസും സർക്കാരും കുറ്റം ചെയ്യുന്നവരുടെ ശരിയായ ഫോട്ടോ എടുക്കണം. തിരിച്ചറിയാനുള്ളവിധം വീഡിയോ എടുക്കണം. സർക്കാർപക്ഷത്തു നിന്നും എതിർപ്പുണ്ടാവുന്നില്ലെങ്കിൽ എതിർപ്പുകൊണ്ടുണ്ടാവുന്ന തുടർന്നുള്ള അപകടങ്ങൾ ഒഴിവാക്കാം. അങ്ങനെ തുടർന്നുള്ള ബന്ദുകളും വിപ്ലവങ്ങളും ഉണ്ടാവുന്നില്ല. സർക്കാരിന്റെ യാതൊരു എതിർപ്പുമില്ലെങ്കിലും ഉണ്ടാവുന്ന നാശനഷ്ടങ്ങൾ ബന്ദും അതുപോലുള്ള കാര്യങ്ങൾ ചെയ്യുന്നവരിൽ നിന്നു തന്നെ നികത്തണം. ഇതു സംബന്ധിച്ച കൂടുതൽ പഠനങ്ങളും ചർച്ചകളും ആവശ്യമാവാം. കോടതിയുടെ അംഗീകാരം ഉണ്ടാവണം. നഷ്ടം നികത്താൻവേണ്ടി സർക്കാരിന്റെയും കോടതിയുടെയും പൊതുജനനേതാക്കളുടെയും സമിതിയുടെ അംഗീകാരത്തോടെ കാര്യങ്ങൾ ശരിക്കും നടത്താൻ സർക്കാർ ശ്രമിക്കണം. **ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ**

सोनिया गान्धी जी सत्य और अहिंसा के मार्ग में

देशरत्न डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

(श्रीमती सोनिया जी गाँधी के बारे में मेरी संकल्पना, जीवनावबोध, अनुभूत सत्य)

महात्मा गाँधी के जन्म दिन से संबन्धित प्रथम असहयोग आन्दोलन का दिनाचरण अन्तर्देशीय दिवस के रुप में युणैटड नेशनल असंबली में मनाया गया। विश्व के मूर्धन्य नेताओं की उपस्थिति से अलंकृत उस विराट सभा में २ अक्तूबर २००७ को भारत के इन्डियन नेशनल कोन्ग्रेस की अध्यक्षा की हैसियत से श्रीमती सोनिया जी गाँधीजी का मुख्य भाषण हुआ तो वस्तुतः वह घटना जगत का एक अपूर्व इतिहास बना।

महात्मा ने जिस सत्य और अहिंसा का जीवन बिताया था और उसी केलिए मृत्यु को स्वीकृत किया था उसी सत्य और अहिंसा को, उसके आचरण के मार्ग को, याने असहयोग अन्दोलन के तरीके को, विपक्षी के विरुद्ध किये जानेवाले स्वरूप को, सोनिया जी बारीकी से स्पष्ट किया था। उन्होंने गाँधीजी के तरीके का समर्थन किया, वह काल, संदर्भ एवं जनसामान्य के अंतर के कारण अनुपयोगी नहीं है। Gandhi's philosophy of non-violence, was his belief that strength comes from righteoueness, not force, power comes from truth, not might, victory comes from moral courage, not imposed submission. He held at means and ends are inseperable, and that infact the means themselves shape the ends. Gandhiji believed unworthy means can never produce worthy ends". xxxx Today in individuals and movements all over the world, continue to develop innovative, non-violent ways to overcome oppression, cumbat discrimination and build democracy. सोनिया जी ने उपर्युक्त गाँधीजी के आशयों एवं भावों का सही अर्थ में समर्थन किया कि - "There are the successes which keep the flame of hope burning bright."

सोनियाजी ने विश्व नेताओं से भरी उस सभा में अपना भव्य निर्देशन निर्द्वद्व भाव से यों समर्पित किया:

"Let us then strive to follow this path of non-violence and so doing become 'truly human'."

गाँधीजी के सिद्धांतों को अपने जीवन पथ में जागरूकता के साथ अपनाते जाने वाला मैं स्पष्ट कह सकता हूँ कि सोनिया जी के चार वर्ष पहले के उस प्रभाषण में वस्तुतः सत्य और अहिंसा के आधुनिक प्रयोक्ता गाँधी जी के प्राण स्पंदित हो उठे थे। यही नहीं महात्मा के कर्मकांडों से सुसंपन्न कोंग्रेस के अध्यक्ष की हैसियत से किये गये उस भाषण ने भी यह समर्थित किया कि ६४ वर्षों के बाद भी कांग्रेस की बागडोर उन्हीं करों में है जो सही-सलामत उसे सुरक्षित रख सकते हैं। वस्तुतः यू.एन.ओ. में किया गया सोनिया गाँधी का विख्यात भाषण कई दृष्टियों से ऐतिहासिक महत्व रखता है। एक युग पुरुष की असाधारण एवं अपूर्वसिद्ध कर्मसाधना से दुनिया ने देखा कि गाँधी नामक एक व्यक्ति ने जगत-समाज को एक परिवार में लाने की नवीन संकल्पना साकार की। सारा जगत एक सात्विक पुरुष के साथ था। यह अभूतपूर्व घटना थी। उनके आत्म समर्पण के ६४ वर्षों के बाद भी उन महापुरुष

के आदर्श को अपनाकर जीवन के असंख्य पहलुओं का सामना किया जाता है।

मेरी दृष्टि में स्वाधीनता-प्राप्त भारत के तत्कालीन अधिकारियों ने गाँधीजी के अद्‌भुत शक्ति-चेतनायुक्त सिद्धांत को विस्मृत करके अंग्रेज़ी संवैधानिक शासन को अपनाया। वास्तव में यह भारत की स्वाधीनता को दुबारा सचैतन्य करनेवाला संविधान नहीं था। यदि गाँधीजी जीवित रहते तो नवीन भारत केलिए शासनमुक्त शासन का सृजन करते। पर उनकी मृत्यु भारत केलिए अहित बनी। अपने भारत केलिए सत्य और अहिंसा का ताना-बाना उपयोग में लाकर एक ऐसा भारत संकल्प में लाते, जिसमें कोर्ट-कचहरी, पुलिस, सेना का शासन न होता, जैसे आज होता है और यह उस समय के संविधानकारों एवं अंग्रेज़ीनुमा मनोभावों के लोगों का सृजना है।

इसी चारित्रिक परिवेश में सोनियाजी गाँधी का भाषण अवश्य आश्वासन देता है कि आज भी असहयोग आन्दोलन जैसी जीवन-चर्या को केन्द्रित करते एक नवीन शासनक्रम की संकलपना की जा सकती है। यह संकल्पना इस युग में भी प्राणदान देगी ही। इसे मन में रखकर मैं ने सोनिया जी गाँधी के उक्त भाषण में आये भावों-विचारों को दोहरी मान्यता कल्पित करता हूँ। उन संकल्पों को रुपाइत करने में गाँधी भक्त अमेरिका के प्रसिडेन्ट श्यामवर्ण श्री बराक ओबामा का सहयोग अवश्य मिलेगा, यही मेरा विश्वास है।

इटली के एक गाँव में १९४७ में जन्मी सोनिया जी का ब्याह १९६८ में एक वसंत पंचमी के दिन राजीव गाँधी के साथ हुआ तो उनका भविष्य दूरव्यापी अद्‌भुत परिवर्तन के अधीन हुआ। नेहरु परिवार से संबन्ध जोड़कर वे अपने जीवन को अप्रत्याशित उन्नति एवं प्रशस्ति तथा वैभव की अधिकारिणी बनी। मानों, किसी ऐन्द्रजालिक नायिका बनी हो। इस प्रकार की ऐश्वर्य-प्राप्ति को उन्हें ईश्वर की प्यारी मानी जानी चाहिए। नेहरु परिवार के राजीव गाँधी से ब्याह, राजीव गाँधी का प्राइम मिनिस्टर बनना याने प्राइममिनिस्टर की पत्नी बनना, प्रधान मंत्री इन्दिरा गाँधी की प्यारी बनना, इन्ड्यन नेशनल कांग्रस की अध्यक्षा बनना, भारत जैसे एक देश का महत्व अपनाना ये सब इटली की एक महिला का भाग्य नहीं है ईश्वरी विधान को कौन जाने?

जिन सोनिया जी गाँधी ने अपने पतिदेव को राजनीति (पोलिटिक्स) से अलग रहने का सख्त उपदेश दिया और इस बात में विवाह मोचन की धमकी भी दी थी, वे ही सोनियाजी गाँधी आज पोलिटिक्स के उच्च स्थान पर बैठकर भारत के प्रख्यात एवं शीर्षस्थ धुरन्धरों पर शासन करती हैं।

यही नहीं उनकी दोनों सन्तानों ने (राहुल गाँधी एवं प्रियंका) राजनीति

में अपने को पूरा लगा दिया है। यह भी एक ईश्वरीय करिश्मा नहीं, तो और क्या है? विदेश में जात स्त्री का आरोप करके विपक्षी दलों का बराबर संघर्ष होने पर भी, उसकी बिलकुल परवाह न कर भारत को अपना देश मानना, उसे मातृदेश मानकर उसके कल्याण पर जुडी रहना एक असाधारण व्यक्तित्व एवं निडरता का द्योतक है। इस निर्भीकता का बल सोनियाजी गाँधी के यश को चार चाँद लगा देता है। सार्वजनिक सम्मेलनों में खुले मैदान में, लाखों की भीड़ में व्याख्यान देते फिरना उनकी निर्भीकता का द्योतक है। अपनी मातृ जैसी इन्दिरा जी का वीर मनोभाव सोनिया जी ने भी अपनाया है।

आज इन महान गुणों के होने के कारण भारत जैसे एक विशाल एवं प्रतिष्ठा-सम्पन्न देश के जीवन की मुख्य धारा में सोनिया जी गाँधी का कार्य-व्यापार, राजनैतिक अवरोध के होने पर भी मान्यता-प्राप्त ही है। राजनैतिक क्षेत्र में जो भी अनुभव उनको प्राप्त हो रहा था उसके कारण अपने पति को राजनीति से अलग रखना चाहती थी। उनकीं आशंका का परिणाम भी उनके विपरीत हुआ। राजनैतिक क्षेत्र में हत्या स्वीकार करनी पडेगी, यहाँ तक शायद सोनिया जी को भय नहीं हुआ होगा। पर, इस अप्रत्याशित कठोर परिणाम के बाद ही वे पोलिटिक्स में इतना अधिक लग गयी हैं। आज उनको देखनेवाला समझेगा कि सोनिया जी गाँधी एक साधारण आबो-हवा में विचरनेवाली एक राजनैतिक नेता हैं। उन्हें किसी प्रकार की आशंका अथवा भय छू नहीं गया है। अन्यथा उन्हें इन बातों को सोचने को समय नहीं मिलता। इस धीर साहसी व्यावहार के लिए उनकी प्रिय इन्दिराजी ही एक अगुवा है। जैसे प्रधान मंत्री इंदिराजी ने अपने ऊपर के आक्रमणों व विरोधों की परवाह नहीं की थी वैसे सोनिया जी गाँधी देश-विदेश में राज्य द्रोह संबन्धी अनेक हमले-आक्रमण होते रहने पर भी और भारत पर भी आक्रमण की आशंका बराबर होने पर भी निश्चिन्त, निर्भय होकर अपना नेतृत्व संभाले रहती हैं, मानों, उसी में उनका ब्रतानुष्ठान निश्चित हो।

इस प्रकार निर्भीकता एवं जन सम्मति प्राप्त करने में साधुता देनेवाली एक महान घटना थी प्रधान मंत्री का उच्च पद त्याग देने का निर्णय। जिस पोलिटिक्स को अपनाते हुए सोनिया जी ने अंत में कहा था:

"The congress is unique. Our uniqueness arises from several basic features of the congress's History, it is character, its ideology and the Legacy of its leadership, I am convinced that the time is ripe for a massive renaissance of our political culture so that we build that society which combines compassion with competence, equity with excellence."

आख़िर चुनाव में विजयी बनी सोनिया जी गाँधी को बी.जे.पि. नेताओं ने प्रधान मंत्री बनाने न देने का विष्वय किया। विदेश में जनमी महिला को भारत का प्रधान मंत्री बनना उनके लिए संकल्प के परे की बात थी। उनके समक्ष १९४७ तक विदेशी शासन के दुष्प्रभाव का अनुभव था। लेकिन, सोनिया जी गाँधी का भारत के साथ सम्बन्ध २९ वर्षों से था। वे इन्ड़िया की प्रतिष्ठित नागरी है। वस्तुतः उनका दिमाग सही अर्थ में तेज एवं सही था। अपने विदेश में जन्म के कारण वे कभी भारत को एक अन्य देश नहीं मानती थी। यही नहीं भारत की प्रजा की भलाई को नयी दिशा एवं गति देने के निश्चय से कांग्रेस की अध्यक्षा बनी। उन्होंने अपनी सूक्ष्म बुद्धि और समय के प्रभाव, को पहचानकर काफ़ी सोच समझकर वह उन्नत पद त्याग दिया। तब भी करोडों देश सेवकों को निराश किया। बहुसंख्यक जनता ने सोनिया जी को अपने भावी प्रधान मंत्री के रूप में देखने की अभिलाषा से मतदान दिया था। ऐसा करके स्वयं कृतकृत्य बने थे। मेरे विचार में मतदाताओं को निराश करके भी श्रीमती जी ने सही सलामत का बुद्धिमानी का परिचय तो दिया। उनके भवन के आंगन और चारों तरफ बड़ी भीड लगी थी कि श्रीमती जी अपना निर्णय बदल दें, उनके शब्दों की तरंगें बोलती भी थीं यही। सांसद सदस्य श्री मणिशंकर अय्यर ने नेशनल रेव्यु द्वारा बताया।

"You cannot betray the people of India. The inner voice of people of India says that you have to become the Prime Minister of India".

मैं डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर प्रधान मंद्री श्री राजीव गाँधी के मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति का सदस्य रह चुका हूँ। यहाँ मेरी भी दिली आकांक्षा है कि विश्वनागरी सोनिया जी गाँधी मेरे राष्ट्र की उचित सेवा और जनता का मंगल करें, साथ ही राजभाषा हिन्दी का भी प्रश्न हल करे।

अध्यक्ष, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, लक्ष्मी नगर,
पट्टम पालस पोस्ट, तिरुवनन्तपुरम ६९५००४

ये भी शोधपत्रिका के आजीवन सदस्य बने (97)

डॉ. उषाकुमारी के.पी., श्री.वी.रागेशकुमार की पत्नी।

जन्म : ०६-०३-१९६७

संपर्क : चीमरा, पाल्कुलंगरा, वल्लक्कडव्, पी.औ., त्रिवेन्द्रम

भाषापरिचय : अंग्रेजी, मलयालम, हिन्दी

परीक्षाएं : केरल विश्वविद्यालय एम.ए-१९८९, पि.एच.डी. केरल विश्वविद्यालय-१९९४

ये भी शोधपत्रिका के आजीवन सदस्य बने (98)

डॉ. जयश्री बी., श्री यू. विजयकुमार की पत्नी।

जन्म : २२-०५-१९६६

संपर्क : श्रीलक्ष्मी, भगतसिंग नगर, इ-स्ट्रीट, मुक्कोला पि.ओ., त्रिवेन्द्रम

भाषापरिचय : अंग्रेजी, मलयालम, हिन्दी

परीक्षाएं : केरल विश्वविद्यालय एम.ए.१९८८, एम.फिल (द.भा.हि. प्रदार सभा) १९९०, पी.एच.डी., कोच्चिन विश्वविद्यालय-२००८

चिरजीव महाकाव्य: सनातन सत्य की पुनरावृत्ति

डॉ. जीवन शुक्ल

हिन्दी विश्वफलक पर दस्तक देने वाली भाषाओं में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। उसकी बढ़ती लोकप्रियता के पीछे अनेक कारण हैं पर उसका बोलना और लिखना तथा पढ़ना तक सा होने के कारण उन सब में प्रमुख है। आज इस भाषा में भारत की अनेक भाषाओं के लेखक गद्य तथा पद्य दोनों में सार्थक सृजन कर रहे हैं। गद्य में जितनी सुगमता से किसी दूसरी भाषा के साहित्य में अपनी पैठ बनाई जा सकती है उतनी ही कठिनता पद्य के परिसर में पाँव जमाने में होती है। लेकिन मुक्तछंद के आँगन में समुद्र को भी समाहित कर लेने की क्षमता है। आज के हिन्दी पाठक और समालोचक को अपने आवास की खिड़की से बाहर झाँकने पर दिखाई पड़ेगा कि भारत के हिन्दी प्रदेशों से दूर दक्षिण भारत की भाषाओं के लेखक बिना किसी बड़ी आशा के हिन्दी के प्रचार प्रसार में लगे हैं। हिन्दी में साहित्यिक अवदान कर अपने को "हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान" के ताने बाने का सशक्त अंग घोषित कर रहे हैं। हमें उनके अवदान को उनकी प्रगति के आधार पर रेखांकित कर अपनी बढ़ती बिरादरी के लोगों को ससम्मान गले लगाने के काम में शिथिलता नहीं बरतनी चाहिए।

मलयालम द्रविड़ परिवार की वह भाषा है जिसके अनेक मूर्धन्य व्यक्ति हिन्दी के सशक्त लेखक भी हैं, डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर उनमें से एक ही नहीं अग्रगणी कलमकारों में हैं। संस्कृत हिन्दी और मलयालम दोनों की भाषायिक लयता की सिम्फनी है। यदि मलयालम का साहित्य देवनागरी में छपकर हिन्दी पाठक के पास आये तो उसे भारत की उस मनीषा का अछूता अंश पढ़ने को मिलेगा जिसमें वैदिक संहिता का संस्कार पल्लवित और पुष्पित हुआ है। डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर के हिन्दी में रचित "चिरजीव महाकाव्य" में उस महाकवि की आत्मा से भेंट होती है जो भारतीय संस्कृति का प्रबल अंश है। इसमें उत्तर-दक्षिण अथवा हिन्दी-मलयालम का अंतर कहीं भासित नहीं होता। इस काव्य का प्रतिपादय विषय है उन सप्त अमर महापुरुषों की गाथा जो भारत की साँस्कृतिक, राजनैतिक और आध्यात्मिक मनीषा का केन्द्र भी है और परिधि भी।

अश्वत्थामा बलिव्यार्यासो
हनुमांश्च विभीषण:
कृप: परशुरामश्च
सप्तैते चिरजीविन:

"चिरजीव महाकाव्य" के महाकाव्यत्व पर दष्टि डालने से पूर्व हमें यह बात मन में बैठानी होगी कि डॉ.चन्द्रशेखरन नायर लीक पर चलने वाले काव्ययात्री नहीं है। उन्होंने इसे महाकाव्य शायद इसीलिए कहा क्योंकि इसके सभी नायक भारतीय इतिहास और संस्कृति के वे पात्र हैं जिनका उल्लेख रामायण और भहाभारत ऐसे महाकाव्यों में हो चुका है और फिर भी उनके व्यक्तित्व का रेखाँकन अधूरा ही लगता हैं। ये पात्र महान हैं, चिरजीवी हैं और काव्यत्व की गरिमा से पूर्ण हैं। डॉ. नायर ने पूर्व पीठिका में लिखा है:

आज कलियुग के अणुयुग में
भाव रूप में वे पुराण पुरुष
अन्तर आया है विपुलाधिक
देखें, सह अस्तित्व वे देते हैं।

अन्य संस्कृतियों के इतिहास में भी युद्ध की भूमिकाएँ हैं पर भारतीय जीवनपद्धति में युद्ध का अर्थ तथा उसका उद्देश्य उनसे भिन्न है। डॉ. चन्द्रशेखरन नायर इसे स्पष्ट करते हुए कहते है:

कहा स्थापित करेंगे धर्म
युद्ध भी इस अर्थ करेंगे हम
सत्य अहिंसा का मार्ग हमारा
समभाव का संकल्प हमारा।

महाबलि सात चिरजीवियों में हैं। इनका केरल की जनता ओणम के पर्व पर स्मरण कर अपने को आज भी धन्य करती है। चन्द्रशेखरन नायर उनकी स्मृति का कारण बताते हैं:

महाबलि के शासन काल में
प्रजा रही थी सानंद सत्य निष्ठ
नहीं रही थी कहीं अरोचकता
नहीं रहा था अकाल अविचार।

हमारा देश उस राजा की स्मृति को अक्षुण रखता है:

दैहिक, दैविक, भौतिक, तापा।
राम राज्य कहू नहीं व्यापा।

भाई-भाई के बीच आज भी युद्ध जारी है। कवि महाभारत के युद्ध का वर्णन बरबरिक से कराकर आज के समाज को यह संदेश देता है कि निजी स्वार्थ और अहम् के प्रभाव में लड़े गये महाभारत से सीख लो:

भाई भाई के बीच हुआ यह युद्ध
संसार को इससे चेते जाना है अवश्य।

कवि के बरबरिक के माध्यम से दिया गया यह संदेश श्लाध्य है, वरेण्य है:

चलता है जगत विश्व-प्यार से
जब इसमें आ घुसता है स्वार्थ
तब होगा जीवन केवल व्यापार।

"चिरजीव महाकाव्य" में वर्णित प्रत्येक पात्र, घटना तथा कथानक अत्यंत प्रामाणिक हैं। हर चरित्र-सर्ग के अंत में डॉ. चन्द्रशेखरन नायर ने उसके प्रामाणिक संदर्भ दिये हैं। यह ज्ञान कम लोगों को है:

यह तो विदित है वैवस्वत मन्वंतर में
अभी तक के द्वापर युगों में
महर्षियों द्वारा वेद का विभाजन
अट्ठाईस दफे हुआ है।

व्यास शब्द का अर्थ एक विस्तार भी है। डॉ. नायर कहते हैं:

व्यास होता है अणु का
आगे भी हो
स्वर्णगर्भा है धरित्री
ढूँढना सही व्यास है।

इस तरह हर चिरजीवी के जीवन का प्रमुख कथानक लिखते हुए कवि ने रामायण और महाभारत के पौराणिक चिरजीवियों की कथा हिन्दी

पुरानी यादें - नए परिप्रेक्ष्य में (राजभाषा भारती-जुलाई-सितंबर २०१० से साभार स्वीकृत)

वैदिक ग्रंथ-आधार ग्रंथ (विदेश जाकर नये रूप में वापस आता है)

मनोहर धरफले

भारत में सत्ता सम्हालते ही अंग्रेजों ने भारतीयों पर अंग्रेजी थोपना शुरू कर दिया था। वह भी बड़ी चालाकी से। सभी प्रकार की शिक्षा अंग्रेजी पुस्तकों के माध्यम से और अंग्रेजी भाषा में देना शुरू कर दिया। देशी भाषाएँ भी अंग्रेज़ी माध्यम से सीखी जा सके, ऐसी व्यवस्थाएँ कर दीं। बड़े और नामी स्कूलों को प्रचार का माध्यम बनाया। संस्कृत विषय के पठन-पाठन पर बन्दिश लगा दी गई। अंग्रेजी पढ़ें, अंग्रेजी में ही लिखें, अंग्रेजी ही बोलें, अंग्रेजी में सोचें, सभी मनोव्यापार अंग्रेजी में ही होते रहें, ऐसी परिस्थितियाँ निर्माण कर दीं। इस भाषा विषयक गुलामी से यदि कोई सिर उठाकर बात करता तो कई प्रकार से हतोस्ताहित कर दिया जाने लगा। उसके सम्मुख बाधाएँ खड़ी कर दी जाती थीं।

प्रारम्भ में तो वे मीठे बोल बोलकर अंग्रेजी भाषा की बढ़ाई करते हुए और अपने ज्ञान की डींग हाँकते हुए हमें लुभाते रहे, फिर धीरे-धीरे अपनी पकड़ गहरी करते रहे। जो भी कार्य वे करते उसका हम पर अहसान जताना कभी नहीं भूलते थे। परिणामतः हम भारतीयों में से जिन्हें अंग्रेजी भा गई वे हमारे मुख्तियार बन गए और अंग्रेजों द्वारा किए गए कार्यों की हमारे सामने प्रशंसा करते हुए उनकी चापलूसी करने लगे। वे बखान करते समय विद्यादान की बात अवश्य करते, मानों अंग्रेज भारत नहीं आते तो यहां विद्या का प्रसार ही नहीं हो पाता। जिसका खाना उसका बजाना, यही बात वे जानते थे। नालंदा विश्वविद्यालय जैसे शिक्षा के केंद्रों को वे आसानी से भुला देते। उसी का परिणाम है कि आज हम सब भारतीयों के सिर पर चढ़ कर बोल रही है अंग्रेजी। हमारी गर्दन की हड्डी, रीढ़ की हड्डी आज अंग्रेजी बनी हुई है। हिंदुओं की ताकत उनके धर्म में है, यह बात अंग्रेज पहले ही जान गए थे। इसलिए ख़ालिस अंग्रेजी विद्या का शास्त्र उन्होंने अपनाया। धर्म परिवर्तन के लिए उसका उपयोग उन्होंने किया। अंग्रेजी पढ़ेगा उसे हर क्षेत्र में सुविधाएं मिलती रहेंगी ऐसा वातावरण उन्होंने बनाया। लेकिन हमारे वे विद्वान जो अंग्रेजी को सब कुछ मानने लगे थे वे यह नहीं समझ सके कि यह धीमी गति से असर करने वाला जहर है जो हम पी रहे हैं। अंग्रेजी पढ़कर ही हम बुद्धिमान बन सकते हैं, ऐसा वे मानने लगे। अंग्रेजों के भारत में आने के पहले से ही भारत विद्या का गढ़ रहा है, यह बात वे भूल गए। अंग्रेजी जानने वाला ही पढ़ा-लिखा माना जाने लगा। इन्हीं चुनिंदा लोगों के वंशज आज भी काले अंग्रेज बन कर अंग्रेजी का गुणगान कर रहे हैं। रामायण काल में पुष्पक विमान का आविष्कार हो चुका था। समुद्र पर सेतु बांधने वाले यंत्री थे। अग्निबाण, पुर्जन्यबाण जैसी मिसाइलें बन चुकी थीं। बड़े-बड़े महल और अट्टालिकाएं बनाने का काम होता था। यह सब क्या विज्ञान विद्या के प्रसार बिना संभव था? धर्म की बात जाने दीजिए जी, उससे कुछ बिगड़ता नहीं यह इन अंग्रेजी टट्टुओं का मानना है। यह सब परिणाम अंग्रेजी की पढ़ाई का ही है। आज स्थिति यह बनी है कि भारत के किसी भी प्रांत का पढ़ा-लिखा व्यक्ति न तो अपनी मातृभाषा ठीक से और शुद्ध रूप से बोल पाता है, न लिख पाता है और न ही समझ पाता है। अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किए बिना उसका काम ही नहीं चलता। मैं अच्छी वस्तु का प्रयोग करता हूँ इस वाक्य को बोलेगा मैं अच्छी चीज का यूज करता हूं। मुझे तुम्हारी बहुत याद आई इस वाक्य को बोलेगा मैंने तुम्हें बहुत मिस किया। स्कूल की पाठ्यपुस्तकों के अलावा क्या कुछ पढ़ रहे हो? किसी माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थी को पूछिए। हेम्लेट पढ़ रहा हूं। हैरी पोटर पढ़ रहा हूं या ऐसी ही किसी अंग्रेजी पुस्तक का नाम कह देगा। कोई नहीं कहेगा कालीदास पढ़ रहा हूं, रामायम, महाभारत, भगवत्गीता या कि गोदान पढ़ रहा हूं। ईसाई मन, ईसाई आंखें, ईसाई सोच होने का ही ये परिणाम है। दस वर्ष पहले कोई वेलेंटाईन डे नहीं मनाता था। ना कि फ्रेंड्स डे, मदर डे या फादर डे। क्योंकि माता-पिता सदैव ही वंदनीय है उनका एक दिन क्यों मनाया जाए। मित्र वही जो दुःख में साथी, उसका दिन कैसा? फ्रैंड्स डे मनाना ही है तो कृष्ण सुदामा मिलन समारोह मनाइए। लेकिन जो अच्छा है वह सब ईसाईयों का, अंग्रेजी का ही है, जो निकृष्ट है वह भारतीय है, ऐसी घिनौती धारणा बन चुकी है। यह सब ईसाई मिशनरियों की देन है।

हमारे ही ग्रंथों को खंगाल कर, उनका अध्ययन कर भूगोल, खगोल, भूगर्भ, विज्ञान, अन्तरिक्ष, गणित, भाषा, धर्म, जीव आत्मा, परमात्मा को समझने का प्रयास किया गया और अपनी नई शैली में हमारी ही बात हमारे सामने रखी गई। भारतीयों की इसी अज्ञानता का लाभ ईसाई मिशनरियां उठा रही हैं। धर्म परिवर्तन कर ईसाई बनने पर आदिवासियों

चिरजीव महाकाव्यः सनातन सत्य की पुनरावृत्ति...

में दुहरा कर मलयालम क्षेत्र की मेधा को हिन्दी भाषी क्षेत्र के लोगों तक अपने शिल्प में पहुँचाकर वैदिक भारत की उस रूप अखंडता को प्रच्छन्न से दोहराया है जो केरल के आदि शंकराचार्य ने वहाँ से चलकर पूरे भारत को दे उसकी अखंडता को चार मठों के माध्यम से कीलित किया था। कल्पना, उपमा, उत्प्रेक्ष बिम्ब, प्रतीक और प्रयोगों से रहित काव्य अँग्रेजी की फ्रीवर्स की भाँति पढ़ते ही मन पर उतरता चला जाता है। मुझे डॉ. चन्द्रशेखरन नायर की गम्भीर हिन्दी सेवा देखकर उनके लिए ये पंक्तियाँ लिखने को विवश होना पड़ा:

मैं मलयाली
हिन्दीवाला
धूनी केरल धाम है।
हिन्दी से दक्षिण को जोड़ूँ
यह संकल्प ललाम है।

धर्मधाम, ग्वाल मैदान, कन्नौज २०९७२५, फोन ०९४१५४७१८१३

को चर्च में जाने की, प्रेयर करने की कोई बोदिश नहीं डाली जाती। वे अपने रीति-रिवाजों को मानने के लिए रहन-सहन अपनी पद्धति से रखने के लिए स्वतंत्र हैं। लेकिन कागजों में, रेकार्ड पर तो वे ईसाई की कहलाएंगे। जनसंख्या का आकलन तो कागजी प्रमाणों पर ही होता है। ब, उनका काम बन गया। लेकिन अध्ययन के बाद इस बात के प्रमाण अवश्य मिल जाएंगे कि बायबल जो कि ईसाइयों का पवित्र ग्रंथ है, उसमें की गई दस आज्ञाएं जिन्हें टेन समांडमेंट्स के नाम से जाना जाता है हमारे वैदिक ग्रंथों की नकल है।

एक्सोडस (Exodus) प्रकरण के बीसवें अध्याय में ये दस आज्ञाएं दी गई हैं। इस अध्याय के बारह से सतरहवें वाक्यों को देखें। बारहवां वाक्य है "Honour Thy Father And Thy Mother" अपने माता-पिता का सम्मान करो। तैंतीरिय उपनिषद में शिक्षाध्याय में जो वचन है मातृदेवो भव, पितृदेवो भव इन वचनों का शब्दशः अनुवाद है यह बारहमां वाक्य। उसी प्रकार से तेरह, चौदह, पंद्रह, सोलह और सत्रह क्रमांक पर जो वाक्य हैं व पातंजल योग सूत्र में स्थित साधनपद के तीसवें सूत्र का रुपांतरण है। वह सूत्र हैं:

"अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहायमाः"

योग के आठ अंग हैः (१) यम (२) नियम (३) आसन (४) प्राणायाम (५) प्रत्याहार (६) धारणा (७) ध्यान और (८) समाधि। इन आठ अंगों में पहला अंग यम है। ये यम पांच हैं:-

(१) अहिंसा-यानि मन, वाणी व शरीर इन तीनों से कभी भी किसी भी प्राणी को पीड़ा न पहुंचाएं।

(२) सत्य-याने दूसरों के भले के लिए सच बोलें।

(३) अस्तेय-बलात्कार से (बल पूर्वक) या एकांत में देखकर भी दूसरे के धन या संपत्ति पर अधिकार न करें या उसे छीने नहीं अर्थात् दूसरे के धन को हथियाने का प्रयास कदापि न करें।

(४) ब्रह्मचर्य-अर्थात् उपस्थ इंद्रिय का संयमन करें। वह सिद्ध न होने पावे इसलिए स्त्री की ओर देखना, उससे भाषण करना, उसे स्पर्श करना, उसकी आवाज सुनना, उसका ध्यान करना आदि व्यवहार न करें।

ये ब्रह्मचर्य योग के अंग हैं। इन ब्रह्मचर्य योग के अंग्रों का सदा रक्षण करें - ऐसा दक्ष संहिता में कहा गया है।

रंगनाथी योगासिष्ठ में संमति श्लोक दिया गया है जो इस प्रकार हैः दर्शनं स्पर्शनं केलिः कीर्तनं गुहा भाषणम् संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रिया निर्वत्तिरेवंच। एतन्मैथुनमष्टांगं प्रवदंतिमनीषिणः। विपरीत ब्रह्मचर्य मेत देवाष्टलक्षणम्।।

(५) अपरिग्रह-याने शरीर की रक्षा के लिए जितने साधन अनिवार्य हैं उतने ही स्वीकार करना। उनसे अधिक साधनों को त्याग देना। ये पांच यम, योग के प्रतिबंधकों का अर्थात् हिंसा, असत्य, स्तेय, स्त्रीसंग, परिग्रह इनका नाश करते हैं इसलिए वे योग के अंग हैं। यम, ये योग के आठ अंग हैं उसमें से यह पहला अंग हुआ। अब दूसरा अंग याने नियम, नियम भी पांच हैं।

"शौचसंतोषतपः स्वाध्यायेश्वर प्राणिधानानि नियमः"।

(१) शौच-याने शुचित्व। मृत्तिका (मिटटी) जल आदि से किया गया और गौमूत्र, यवपिष्ट आदि पवित्र आहारों से किया गया वह ब्राह्य शौच होता है। मैत्रादि (मित्रता) भावना से मन में द्वेष, जलन का त्याग करना उसे अंतः शौच कहा जाता है।

(२) संतोष - किसी को भी पीड़ा न देते हुए प्राप्त किया गया अन्त वह भी उतना ही जितने से प्राण की रक्षा हो जाए। ऐसा और इतना ही अन्त स्वीकार करना और संतुष्ट होना।

(३) तपः याने शीत - उष्ण आदि द्वंद को सहन करना और कुच्छ चांद्रायण आदि करना (उपासना-प्रार्थना आदि)।

(४) स्वाध्याय अर्थात् प्रणव (ॐ) आदि का जप करना।

(५) ईश्वर प्राणिधान-अर्थात् ज्ञान से या अज्ञान से जो मैं शुभ या अशुभ कर्म करता हूं वह सब तुझे (ईश्वर को) अर्पित किया है। तेरी प्रेरणा पाकर ही मैं सब कर्म करता हूं। शरीर से, मन से अथवा वाणी से जो क्रिया मैं नित्य करता हूं वह जन्मजन्मांतर में भी केशव जो परमात्मा है उसकी आराधना के संदर्भ में ही हो, यह सोचना।

इस प्रकार अपने सभी पुण्य कर्म को ईश्वर को ही अर्पण करना। इस प्रकार योग के पहले पांच अंग याने यम और दूसरे पांच अंग याने नियम इन्हीं को दृष्टिगत रख कर बायबल में दस आज्ञाएं (Ten Commandments) निश्चित की गई है।

Exodus (एक्सोडस) के बीसवें अध्याय को देखें।

(अ) तेरहवां वाक्य है-Thou Shalt not kill तुम हिंसा मत करो। पांच यमों में पहला यम अहिंसा है। उसका यह रूपांतरण है।

(ब) चौदहवां वाक्य-Thou Shalt not commit adultery तुम व्यभिचार मत करो। पांच यमों में चौथा यम बह्मचर्य उसका यह रुपांतरण है।

(स) पंद्रहवां वाक्य-Thou Shalt not steal तुम चोरी मत करो। यमों में तीसरा यम अस्तेय उसका यह रूपांतरण है।

(द) सोलहवां वाक्य-Thou Shalt not bear false witness against thy neighbour झूठी गवाही मत दो। पांच यमों में दूसरा यम सत्य इसका यह रूपांतरण है।

(ई) सत्रहवां वाक्य-Thou shalt not covert they neighbour's house, thou shalt not covet thy neighbour's wife, not his man servant, not his maid servant,, nor his ox, nor his as, nor any thing that is thy neighbours पड़ोसी की या दूसरे की किसी भी वस्तु की (मकान, पत्नी, नौकर, बैल, गधा या अन्य कोई वस्तु जो दूसरे की है) अभिलाषा मत करो, न उन्हें हथियाने का या प्राप्त करने का प्रयास करो। पांचवा यम अपरिग्रह उसका यह रुपांतरण है। इशावस्योपनिषद् में लिखा है मा गृधः कस्यास्विद्धनम अर्थात् दूसरे के धन की लालसा या आकांक्षा मत करो। उसका यह अनुवाद है।

ये तेरह से सतरह तक के पांच वाक्य याने पातंजल योगसूत्र के पांच यम हैं। Command याने संबंध (सम्यक बंधन) Abandon याने अबंधन।

अतः स्पष्ट है कि बायबल में जो दस आज्ञाएं हैं वे अष्टांग योग के पहले दो अंग हैं। यम और नियम यह कहने पर संपूर्ण योग का अभ्यास किया जा सके इसलिए इन दस आज्ञाओं का उल्लेख किया गया है।

हिन्दी पर गहराता संकट (गतांक से आगे)

डॉ. केशव फालके

"क्या बात है कि दुर्दिन हिन्दी के बढ़ रहे हैं,
उसके ही सगे हिन्दी का दुर्भाग्य गढ़ रहे हैं
भयभीत सूर तुलसी, मीरा सिसक रहीं है,
वाणी कबीर की भी क्षण भर ठिठक रही है"

(2003-2004–पुणे, डॉ.केशव फालके)

वर्षों से हिन्दी की महिमा का जी-जान से बखान करते न थकने वाले लोगों को कौन और कैसे समझाएँ कि बोलियों को भाषाएँ बनवाने का अंजाम कितना भयंकर होगा। मैंने बोलियों को भाषाएँ बनवाने के अभियान की टोह लेने का प्रयास किया तो पता चला कि इसके पीछे राजनीतिज्ञों की कुटिल चाल है। वह यह कि बोलियाँ भाषाएँ होंगी। भाषाओं के आधार पर छोटे-छोटे राज्य (मिथिलांचल की मांग) बनेंगे। फिर बड़ी राजनीति में न टिकने वाले लोग वहाँ मंत्री होंगे-कुछ मुख्य मंत्री होंगे। उन राज्यों का बड़ा बजट होगा। उनकी इच्छा के अनुसार खर्च के अधिकार मिलेंगे। क्या आश्चर्य है कि कुछ लोग झारखँड के पूर्व मुख्य मंत्री (श्री. मधु कोड़ा-ख़बरों पर आधारित) जैसे सपने देख रहे हों। दूसरी ओर शिक्षा के क्षेत्र में अकादमियाँ बनेंगी। छुट-भैय्यें साहित्यकारों के मन में पुरस्कारों और प्रकाशन अनुदानों की ललक जाग गयी हो। केन्द्र और राज्य सरकारों से बड़ा अनुदान मिलेगा जिससे मिल-बॉटने के अवसर बढ़ेंगे। यही 'फार्मुला' अन्य महकमों में भी काम कर सकेगा। करेगा। सब जगह 'ढाक के तीन पात।'

हिन्दी भी इसी तुगलकी सल्तनत की शिकार है जो लाल फीताशाही का भारतीय पेटेंट है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार, विकास और समृद्धि का दायित्व जिन हाथों सौंपा गया था उन्होंने इस राष्ट्रीय दायित्व का, उस वफ़ादारी का गंभीरता से निबाह नहीं किया। हिन्दी दिवस, हिन्दी सप्ताह, हिन्दी पखवाड़ा इत्यादि मात्र सालाना रस्म-अदायगी बन गये हैं। सरकार से मिले विपुल अनुदान को निबन्ध स्पर्धा, वक्तृत्व स्पर्धा, पत्राचार-स्पर्धा और फिर प्रथम, द्वितीय, तृतीय और प्रोत्साहन पुरस्कारों की परिपाटी किसी उत्सव धर्मी वार्षिक कार्यालयीन अनुष्ठान की भाँति मनायी जाती है और फिर आगामी वर्ष भर के लिए फाईलें बंद कर दी जाती हैं। कमो बेश यही नज़ारा केन्द्र सरकार की हिन्दी सलाहकार समितियों में भी देखा गया है। क, ख और ग क्षेत्रों में पत्राचारों का वार्षिक लेखा-जोखा प्राप्त करना प्रमुख उद्देश्य होता है। इसमें सुधार के लिए किसी सख्त कारवाई का प्रावधान नहीं है। एक मंत्रालय की इस समिति के अध्यक्ष मंत्रीजी के अनुसार "भाई अब सख्ती तो कर नहीं सकते। समझा-बुझाकर नम्रता से ही काम लेना पड़ेगा"। कितनी बेचारगी है! और इस भारतीय सांस्कृतिक नम्रता का प्रयोग पिछली अर्धशती से चल रहा है। परिणाम स्वरुप कार्यान्वयन की सफ्तार मीटरगेज रेल गाडी से स्पर्धा कर रही है। इतना ही नहीं तो इन कार्यालयों की इस अनोखी ढिलाई के कारण ही कर्मचारियों में किसी भी प्रकार का भय नहीं रह गया है। वे बेफिक्र हो गये हैं। इसी अनहोनी ढिलाई के साथ साल पर साल बीतते चले जा रहे हैं।

इधर कुछ वर्षों से बड़ी तामझाम से मनाये जाने वाले हिन्दी दिन को समाचार पत्रों में **'श्राद्ध दिन'** कहने की धृष्टता भी देखी गयी है। यदि इस श्राद्ध स्थिति तक हिन्दी को पहुँचाने वाले कौन हैं? यह पूछा जाय तो उत्तर साफ-साफ सबके सामने है। मुम्बई की एक संस्था ने तो गत 14 सितम्बर 2009 को **'हिन्दी दिन'** के नाम से नहीं तो भारतीय भाषा दिवस के नाम से मनाया। लगता है इन जैसे लोगों को हिन्दी दिन मनाने में भी शर्म महसूस होने लगी है। यह कैसी उदासीनता है? हिन्दी के प्रति श्रद्धा और लगाव का कौन सा तरीका इसे माना जाय? विचानणीय है। यह भी हिन्दी को दुर्बल बनाये जाने की साजिश का एक भाग ही माना जाय क्या? किसी की अकर्मण्यता और अनुशासनहीनता पर जॉच समिति बैठाई जाय तो मामला अविलम्ब कर्मचारी संगठनों के हाथों चला जाता है। आज एक नया तरीका बहुत जोरों पर है - वह है कि **फाईलें गायब कर देना, उनको आग के हवाले कर देना** - न रहे बाँस न बजे बाँसुरी। जवाबदारी झटकना, कर्मचारी संगठनों का आश्रय लेना आम बात हो गयी है। अब सरकार करें भी तो क्या करें। और अब तो सरकार के मायने ही बदल गये हैं। सरकार आखिर कौन है? कहना असंभव है। इस मामले में 'मंत्री और संत्री' एक बिरादरी के हो गये है। **'तेरी भी चुप-मेरी भी चुप-मिल-बाँट खाओं गुपचुप'** का तंत्र (गणतंत्र) जोरो से काम कर रहा है। दंड का विधान बुक शेल्फ में बंद है। कौन किस पर कार्रवाई करें - **हम्माम में सभी नंगे**। यही मूल कारण है कि सभी क्षेत्रों में विकास की गति मंद है। माननीय प्रधान मंत्री और वित्त मंत्री द्वारा जताये गये विकास की गति के आँकड़ें ऊपर-ऊपर से लुभावने भले ही दीख्र पड़ते हों परन्तु उतने ही रहस्यमय भी हैं जो **'आम आदमी'** की समझ के बाहर हैं। बेचारे **'आम आदमी'** तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के तीन बन्दरों की भांति हो गये हैं। 'हिप्नोटाइज़' हो गये हैं। चौराहों-चौपालों पर लोग यह कहते पाये गये हैं कि बस! अब तो भगवान ही माई-बाप हैं। क्या देश को मिली आज़ादी का यही अर्थ है? लोगों को यह भी कहते सुना है कि **'इनसे तो अंग्रेज अच्छे थें'**। यह भारत का दुर्भाग्य नहीं है तो और क्या है? **'हरि अनंत हरी कथा अनंता'**।

हिन्दी के संदर्भ में विडम्बना इस बात की है कि जहाँ सारा

पुरानी यादें - नए परिप्रेक्ष्य में.....

इसके अतिरिक्त श्रीमद् भागवत एकादश स्कंध अध्याय उन्नीस में (१) अहिंसा (२) सत्य (३) अस्तेय (४) विषय-वासनाओं पर अनासक्ति (५) लज्जा (६) संचय न करना (६) धर्म पर विश्वास रखना (८) ब्रह्मचर्य (९) मौन (१०) स्थिरता (११) क्षमा (१२) अभय-ये बारह नियम बताए गए हैं। इस प्रकार वैदिक ग्रंथों की विविध आचरण संविधाओं का आधार लेकर की बायबल में (Ten Commandments) दस आज्ञाएं तैयार की गई हैं। यह सिद्ध हो जाता है। क्योंकि ऊपर वर्णित सभी ग्रंथ बायबल के पूर्व लिखे गए हैं। इस प्रकार हमारी बात हम ही को समझाने के प्रयास अंग्रेजी भाषा के प्रचार के माध्यम से किए जा रहे हैं।

मनोहर धरफले, १७३-साकेत नगर, इन्दौर ४५२०१८

विश्व हिन्दी को गले लगाने को बाहें पसार रहा है वहाँ भारत में हिन्दी को नष्ट करने के कुचक्र रचे जा रहे हैं। अपवाद स्वरुप केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नयी दिल्ली और केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के प्रयास निस्संदेह ही सराहनीय हैं। साथ ही अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ और भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् की भूमिका भी उल्लेखनीय है। विश्व के लगभग डेढ़ सौ विश्वविद्यालयों में हिन्दी का स्नातक ही नहीं तो स्नातकोत्तर स्तर तक अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी में पी.एच.डी. के स्तर पर भी शोध कार्य हो रहा है। स्तरीय साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन हो रहा है। आकाशवाणी पर खबरों का प्रसारण हो रहा है। विज्ञापन और हिन्दी चलचित्रों की भारी मांग देखी गयी है। बाजारवाद की ही जरूरत क्यों न हो हमें तो इसी बात में अतीव प्रसन्नता है कि हमारी हिन्दी विश्व भर में अपना विस्तार पा रही है। अपने पांव जमा रही है। रोमनीकरण के प्रभाव में उसके 'हिंग्लिश' हो जाने का, वर्तनी में दोष आ जाने का खतरा अवश्य दीख पड़ रहा है परन्तु मेरे विचार में इसे सुधारा जा सकेगा। बुश प्रशासन द्वारा अमेरिका में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन के लिए विशेष प्रोत्साहन दिया जाना हमारे लिए प्रसन्नता का विषय होना चाहिए। इसी से प्रेरित होकर टेक्सास प्रान्त में माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी अध्यापन हेतु भारतीय मूल के श्री. अरुण प्रकाश द्वारा 480 पृष्ठों की पुस्तक तैयार किया जाना अमेरिका में हिन्दी की बढ़ती मांग को प्रदर्शित करता है। पुस्तक का नाम है - **'नमस्ते जी'** जिसे तैयार करने में अरुण प्रकाश ने आठ वर्षों का समय लगाया। **'सलाम नमस्ते'** नामक हिन्दी रेडियो कार्यक्रमों का नियमित प्रसारण हो रहा है।

राष्ट्रीय सुरक्षा कारणों से राष्ट्रपति जॉर्ज बुश अमेरिका की युवा पीढ़ी को बहु भाषी बनाना चाहते थे और इसी के तहत किंडरगार्टन से विश्वविद्यालय स्तर तक अरेबिक, मंडारिन, रशियन और हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन के लिए उन्होंने 114 मिलयन डॉलर के अग्रिम बजट का प्रावधान कर दिया था और अध्यापकों की भरती भी आरम्भ कर दी थी। इसी योजना के तहत मथुरा के श्री जगदीश प्रसाद शर्मा हिन्दी अध्यापन हेतु अमेरिका गये थे। अमेरिका के कवनेक्टीकट और कैरोलिना से आये एक प्रतिनिधि मंडल ने श्री शर्मा सहित 100 पूर्णकालिक हिन्दी शिक्षकों के साथ ही 70 अरेबिक शिक्षकों के लिये भी नोयेडा में साक्षात्कार लिये थे। अमेरिका की कुछ पाठशालाओं में विदेशी भाषा के रूप में फ्रेंच, स्पेनिश और जर्मन के साथ हिन्दी को भी लागू करने का निर्णय लिया था। आश्चर्यचकित करने वाली और एक जानकारी मिली है कि अमेरिका के ओहिवो विश्वविद्यालय के ओट्टरबियन कॉलेज में पुणे के भारतीय निर्देशक श्री क्रांति कानड़े की बाल अधिकार की संवेदनशीलता को दर्शानेवाली प्रथम फ़िल्म महेक को पूरक अभ्यास योजना के अन्तर्गत आधुनिक भारत के अध्ययन में स्थान दिया है। इस महाविद्यालय ने इससे पूर्व भी अपर्णा सेन की मिस्टर एण्ड मिसेस अय्यर, नेमशेक और रिचार्ड एटनबरो की गांधी फिल्मों को भी अभ्यास क्रम में समाविष्ट किया था।

अमेरिका द्वारा इस प्रकार हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन के लिए किये गये प्रयास किसी को भी किंकर्तव्यविमूढ़ कर सकते हैं परन्तु यह एक सच्चाई है। अमेरिका में बढ़ते हिन्दी के रुतबे की चर्चा करते हुए प्रो.हरमन वान आलफन ने कहा है **"भारत में लोग भले ही समझे कि हिन्दी दीन-हीनों की भाषा है, लेकिन सच यह है कि अमेरिका जैसे देश में इस भाषा (हिन्दी) का प्रचार-प्रसार तेज़ी से हो रहा है। आगे उनका कहना है कि भारत में हिन्दी के प्रति लोगों का लगाव लगातार कम होता जा रहा है लेकिन सात समुंदर पार स्थितियाँ भिन्न हैं"**।

आस्ट्रेलिया में बढ़ती भारतीय मूल के लोगों की संख्या के मद्देनज़र वहाँ भी हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन का गंभीरता से विचार किया जा रहा है। भारत को विश्व का एक बड़ा बाज़ार मानकर चीन भी देश में हिन्दी को अभ्यासक्रम में डालने पर विचार कर रहा है। ग्रंथपाल श्रीमती सू झिओलान के अनुसार चीन की राजधानी बेजिंग के राष्ट्रीय ग्रंथालय में भारतीय भाषाओं में लिखी तीस हज़ार पुस्तकें हैं जिनमें तेईस हज़ार पुस्तकें हिन्दी की हैं। जापान, रूस, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड, हॉलैंड, नार्वे इत्यादि देशों में दशकों से हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन का कार्य हो रहा है। मॉरीशस, त्रिनीदाद, टोबैगों, गुयाना, सूरीनाम, फीज़ी में तो भारतीय मूल के लोगों ने मरणांतक वेदनाएँ झेल कर भी हिन्दी को ज़िंदा रखा। हिन्दी को अपनाने वाले देशों की लम्बी फेहरिस्त है जो स्वतंत्र लेख का विषय है। फिर भी कुछ देशों और विद्वानों का नामों का यहाँ उल्लेख करना समीचीन लगता है। यथा-अमेरिका (डॉ. केरीन शोमर, डॉ. लिंडा हेस, प्रो.राम चौधरी), रुस (डॉ. प्योतर अलिक्सेयेविच वारान्निकोव), इंग्लैंड (डॉ. गिल क्राइस्ट), चीन (प्रो.येन हांगयून), जापान (डॉ. तोशिओ तनाका, डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण) जर्मनी (डॉ. ओदोलेन स्मेकल, डॉ. मारगेट गात्स्लाफड), फ्रांस (एनी मौंट), नीदरलैंड (तेयो दमिस्तेख्त), पोलैंड (प्रो.मारिया क्षिश्तोफ बृस्की), हंगरी (डॉ. मारिया जे ज्येश्ती), डेन्मार्क (प्रो.फिन थीसन), तज़ाकिस्तान (प्रो.रजाबोव हबीबुल्ला), उजबेकिस्तान (डॉ. आज़ाद शमतोफ़), बुल्गारिया (डॉ. योर्दांका बोयानोवा), इटली (डॉ. मरियोलो अफ़रीदी), चेक गणराज्य (डॉ. शारका लितविनोवा, प्रो. स्वेती स्लाव कोस्तिक), रोमानिया (प्रा.लौरेन्त्सयु तेबान), फिनलैंड (प्रो.पारपोला), रोम (प्रो. जोर्जो मिलानेत्री), न्यूज़िलैण्ड (रोहित कुमार हैप्पी), थाईलैंड़ (प्रो.बम्रु ख़ाम एक), इंडोनेशिया (प्रो.सोमवीर), कोरिया (प्रो.ई.उन.गू), मलयेशिया (श्रीमती वीणा पंचमिया), सिंगापुर (डॉ. वीणापाणी शर्मा), म्यान्मार (डॉ. ऊ.पारगो), नैटाली-द. अफ्रिका (आर्य समाज-स्वामी भवानी दयाल सन्यासी, उसा गुल्क), मॉरीशस (वीरसिंह जागासिंह), सूरीनाम (डॉ. जीत नारायण, श्री. बालकृष्ण करताराम), फ़ीजी (सुब्रमणी), त्रिनिदाद - टुबैगो (कमला रामलखन), नेपाल (डॉ. सूर्यनाथ गोप), श्रीलंका (प्रो. उपुल रनजीथ हेवावितंगामगे)।

सम्प्रति मुद्दा है कि विदेशों में तो हिन्दी आशा से अधिक विस्तार पा रही है परन्तु भारत में, अपने ही देश में उसे अस्तित्व की लड़ाई का सामना करना पड़ रहा है जो भारी चिन्ता का विषय बन गया है और विश्वमंच पर लज्जा का विषय भी। सूरीनाम में सम्पन्न सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन में श्री मधुकर उपाध्याय ने कहा था कि **'हिन्दी को पहले हमें अपने घर में ही सम्मान दिलाना होगा। बाकी चीज़ें खुद-ब-खुद हो जाएंगी'**। अतएव हिन्दी से सच्चा प्रेम करने वाले लोगों से विनम्र अनुरोध है कि वे अविलम्ब हिन्दी को इस संकट से केवल बचाने के लिए ही नहीं तो देश-विदेश में हिन्दी का परचम बुलंद करने के लिए एकजुट हों। इसे भलीभांति याद रखें कि हिन्दी से प्रेम करना भारत से प्रेम करना है। **जय भारत जय हिन्दी।** ●

नरेन्द्र कोहली के महाभारतमूलक उपन्यास "महासमर" के प्रथम खण्ड बंधन में पौराणिक संदर्भों का पुनराख्यान

डॉ अरुणा

डॉ. नरेन्द्र कोहली ने भारतीय पौराणिकता के सर्वकालिक और सार्वभौम महत्व को समझते हुए अपने उपन्यास के माध्यम से पौराणिकता का उपयोगी एवं मान्य पुनराख्यान किया है जो आधुनिक युग के लिए मान्यता तथा प्रासंगिकता रखता हैं। इन्होंने पौराणिक आख्यानों के आधार पर समसामायिक समस्याओं, उनके समाधान तथा समीक्षा का प्रयास किया है।

'बंधन' शान्तनु, सत्यवती तथा भीष्म के मनोविज्ञान तथा जीवन मूल्यों की कथा है। घटनाओं की दृष्टि से यह सत्यवती के हस्तिनापुर आने तथा हस्तिनापुर से चले जाने के मध्य की अवधि की कथा है।

डा. नरेन्द्र कोहली ने पारम्परिक वस्तु विन्यास के प्रमुख प्रवाह को पकडे रहकर भी उनके अविश्वसनीय चमत्कारिक अंशों को वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक तथा तर्कमान्य रूप में ढालने का प्रयास किया है।

शान्तनु व गंगा की कथा:

पुराणों तथा महाभारत में वर्णित शान्तनु एवं गंगा की अलौकिक कथा को डॉ. नरेन्द्र कोहली ने यथासंभव लौकिक बनाने की चेष्टा की है। महाभारत के आदिपर्व में शान्तनु और गंगा का प्रसंग इस रूप में आया है-

ततः कदाचित् ब्रह्माणमुपासांचक्रिरे सुराः।
तत्र राजर्षयोह्यासनं स च राजा महाभिष।।
अथ गंगा सरित्सु श्रेष्ठा समुपायात् पितामहम्।
तस्या वासः समुदृतं मारुतेन शशिप्रभम्।।
ततोऽभवन सुरगणाः सहसावाङ्मुख्रास्तदा।
महाभिषस्तु राजर्षिरशंको दृष्टवान् नदीम।।
सोऽपध्यातो भगवता ब्रह्मणा तु महाभिषः।
उक्तश्च जातो मर्त्येषु पुनर्लोकानं वाप्स्यसि।।
ययाऽऽहृतमनाश्चासि गंगया त्वं हि दुर्मते।
सा ते वै मानुषेलोके विप्रियाष्याचरिष्यति।।[३]

मृत्यलोक में यही महाभिष हस्तिनापुर नरेश महाराज प्रतीप के पुत्र के रूप में जन्में और ब्रह्मा के शापानुसार महाराज प्रतीप का पुत्र (शान्तनु) गंगा का पति हुआ। शान्तनु तथा गंगा से उत्पन्न सात पुत्रों के रूप में वसुओं ने जन्म लिया था। सब वसुओं का सारभूत अंश लेकर आठवें पुत्र के रूप में देवव्रत (भीष्म) का जन्म हुआ।

एवं हि वर्तमानेऽहंत्वार्य वत्स्यामि पार्थिव।
वारिता विप्रिया चोक्ता व्यजेयं त्वामसंशयम्।।[४]

डॉ. नरेन्द्र कोहली ने कथानक तो प्रायः यही रखा है किंतु उसके अलौकिक अंशों को उन्होंने लौकिक तथा विश्वसनीय बनाने की चेष्टा की है। शान्तनु पुत्र देवव्रत विचार करता है कि उनके पिता ने उनकी माँ से बिना विशेष परिचय तथा बिना कुल शील का ज्ञान किये विवाह कैसे कर लिया?

"उनके पिता ने माँ को गंगातट पर देखा था और तत्काल मुग्ध हो उठे थे। उनके विषय में पिता ने कोई खोज, कोई पूछताछ नहीं की थी। वह कौन थी? किसकी बेटी थी? उसके साथ विवाह के लिए किससे अनुमति की आवश्यकता है? ... उनके पिता ने कुछ नहीं जानना चाहा था। ...आर्य लोग रक्त की शुद्धता के लिए दृढ़ आग्रही होते हैं तो आर्य सम्राट शान्तनु ने माँ गंगा का कुल-गोत्र जानने की तनिक भी चेष्टा क्यों नहीं की थी"।[३]

महाभारत के अनुसार गंगा देवव्रत को साथ ले गई थी, किंतु नरेन्द्र कोहली ने इसमें परिवर्तन किया है। इन्होंने दिखाया है कि शान्तनु द्वारा वर्जित किये जाने से रुष्ट गंगा ने वह शिशु शान्तनु की गोद में डाल दिया और स्वयं घर छोड़कर चली गयी।[४]

भीष्म प्रतिज्ञा तथा शान्तनु के साथ सत्यवती का विवाहः

हस्तिनापुर नरेश शान्तनु निषाद कन्याम त्यागंधा सत्यवती पर आसक्त हो जाते हैं। सत्यवती के पिता दासराज शर्त रखते है।

अस्यां जायते यः पुत्रः स राजा पृथिवीयते।
त्वदूहवमाभिषेक्तव्यो नान्यः कश्चन् पार्थिव।।[५]

(पृथ्वीपते! इसके गर्भ से जो पुत्र उत्पन्न हो, आपके बाद उसी का राजा के रूप में अभिषेक किया जाए, अन्य किसी राजकुमार का नहीं)

शान्तनु अपनी पूर्व पत्नी गंगा से उत्पन्न सुयोग्य पुत्र देवव्रत के कारण शर्त नहीं मान सके और निराश होकर राजधानी लौट आए। युवराज देवव्रत को जब इस घटना का ज्ञान हुआ तब उसने स्वयं दासराज के पास जाकर उसे वचन दिया कि सत्यवती का पुत्र ही हस्तिनापुर के राजसिंहासन पर बैठेगा। दासराज ने नया प्रश्न उत्पन्न किया, "आप सत्यवती के पुत्र के लिए अपना राज्याधिकार छोड़ रहे हैं। मैं आपका विश्वास कर रहा हूँ, किंतु कल आप विवाह करेंगे, आपके पुत्र होंगे, वे बड़े होंगे... संभव है कि वे आपसे कहे कि आपको अपना राज्याधिकार, अपने जीवन के सुख और भोग छोड़ने का पूरा अधिकार है, किंतु आपके क्या अधिकार है कि आप चक्रवर्ती सम्राट शान्तनु के ज्येष्ठ पुत्र की ज्येष्ठतम संतान से हस्तिनापुर के राज्य का उत्तराधिकार छीन लें? ...आप अपने पुत्र के स्थान पर यह वचन कैसे दे रहे हैं कि वह अपने उचित नैतिक, पारम्परिक और वैधानिक अधिकार के मांग नहीं करेगा"?[६]

इस स्थिति में देवव्रत ने प्रतिज्ञा की कि मैं विवाह नहीं करूंगा। आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करूँगा। जब मेरे कोई पुत्र ही नहीं होगा तो सत्यवती के पुत्र से सिंहासन छीनने का प्रयास कौन करेगा?

महाभारत और श्रीमद्भागवत पुराण में वर्णन है कि भीष्म अपने पिता से चिन्ता का कारण पूछते हैं और अपने पिता से कहते हैं,

धिक तं सुतं य पितुरीप्सितार्थ क्षमोअपि सन्न प्रतिपादयेद् यः।
जातने कि तेन सुतेन कामं पितुर्न चिन्ता हि समृद्धरेयः।।[७]

कोहली जी के अनुसार, देवव्रत अमात्य से अपने पिता की व्याकुलता का कारण पूछते हैं। कोहली जी ने इस प्रसंग में पिता-पुत्र के सम्बन्ध के संकोच का वर्णन किया है, "वयस्क पुत्र के सम्मुख अपने नये विवाह की इच्छा कौन पिता प्रकट कर सकता है राजकुमार?", मंत्री का स्वर गम्भीर था, यही तो चक्रवर्ती का द्वन्द्व है...?[८]

इस घटना के पूर्व ही महाभारतानुसार मत्स्यगंधा और पराशरर ऋषि के सम्पर्क से कृष्ण द्वैपायन (वेदव्यास) का जन्म हो चुका था। लेखक यहाँ महाभारत में वर्णित चमत्कारिता से बचा है। महाभारत के अनुसार, कृष्ण द्वैपायन जन्म लेते ही अपनी माँ को यह आश्वासन देकर कि जब आप मुझे याद करेंगी, मैं आपके समक्ष उपस्थित हो जाऊँगा - वह अपने पैरों से चलकर तप के लिए चला गया, जबकि नरेन्द्र कोहली ने इस घटना को स्वाभाविक ढंग से दिखाया है। दासराज अपनी पुत्री को दूर भेज देता है और प्रसव के उपरान्त उस शिशु को उसके पिता पराशर को पालन-पोषण के लिए सौंप देता है।

गांधारी की आँखों पर पट्टी बाँधना:

महाभारत में वर्णित है "जब गांधारी को यह बात मालूम हुई कि मेरे भावी पति नेत्रहीन हैं, तब उसने एक वस्त्र की कई तह करके उससे अपनी आँखें बाँध लीं। पतिव्रता गांधारी का यह निश्चय था कि मैं अपने पतिदेव के अनुकूल रहूँगी"।[९]

नरेन्द्र कोहली गांधारी की आँखों की पट्टी को विश्वसनीय नहीं मानते। उनका तर्क है कि एक ही पट्टी दो दिन भी बांधी जाए तो वह इतनी मैली हो जाती है कि उस गंदे वस्त्र के सम्पर्क में रहने वाले व्यक्ति की आँखों में कोई न कोई रोग हो जाएगा और नेत्रों की ज्योति समाप्त हो जाएगी। यदि कोई व्यक्ति अपनी आँखों को एक लम्बे समय तक निरन्तर बंद रखेगा, पट्टी बांधेगा, उनसे काम नहीं लेगा, उनको स्वच्छ नहीं रखेगा, उन्हें सूर्य का प्रकाश नहीं मिलेगा, उन्हें पवन का स्पर्श नहीं मिलेगा, तो उसकी आँखों में देखने की क्षमता नहीं रहेगी। वह अंधा हो जाएगा।

अपने उपन्यास 'निर्बन्ध' में लेखक ने लिखा है, "आपने कभी सोचा है कि वे सदा पट्टी बाँधे रहती थीं या केवल सार्वजनिक स्थलों पर प्रकट होने पर ही पट्टी बाँधती थीं"?[१०]

नरेन्द्र कोहली के अनुसार गांधारी की आँखों पर पट्टी बाँधना अपने रोष को मुखरित करना था। वह नहीं चाहती थी कि उसका विवाह एक जन्मांध से हो। भीष्म की शक्ति के आतंक के कारण गांधार नरेश सुबल को अपनी पुत्री विवशतापूर्वक एक जन्मांध को सौंपनी पड़ी।

कुन्ती द्वारा नियोग पद्धति से पाण्डवों की उत्पत्ति:

लेखक ने कुन्ती के मंत्राह्वान से पधार कर देवताओं द्वारा सन्तानोत्पत्ति को भी परिवर्तित करके विश्वसनीय रूप में प्रस्तुत किया है।

ब्राह्मस्य वचस्तथ्यं तस्य कालो*f* भागत:।
अनुज्ञाता त्वया देवमाह्वयेयमहं नृप।।
यां में विद्यां महाराज अददात् स महायशा:।
तपाहूत: सुर: पुत्रं प्रदास्यति सुरोपम।।
अनपत्यकृतम् यस्ते शोकंहि व्यपनेष्यति।
अपत्यकामेव स्यान्ममापत्यं भवेदिति।
त्वतो*f* नुज्ञाप्रतीक्षां मां विद्धयीस्मिन कर्मणि स्थिताम्।।[११]

नरेन्द्र कोहली के अनुसार कुन्ती और माद्री के पुत्र पाण्डु के इच्छा से नियोग पद्धति से हुए थे। नियोग के समय नियुक्त पुरुष की कल्पना उस देवता के रूप में कर ली जाती थी। युधिष्ठिर के गर्भस्थापन के समय नियुक्त पुरुष की कल्पना धर्मराज के रूप में, भीम के गभर्रस्थापन के समय वायु की, अर्जुन के गर्भस्थापन के समय इन्द्र की तथा नकुल सहदेव के गर्भस्थापन के समय अश्विनी कुमारों की कल्पना की गई थी।

नरेन्द्र कोहली के 'बंधन' उपन्यास के अनुसार यह प्रसंग इस प्रकार है - चकित मत हो प्रिय! पाण्डु धीरे से बोला, "औरस पुत्र उत्पन्न करने की क्षमता मुझमें नहीं हैं, अत: क्षेत्रज पुत्र की सम्भावना को आर्षद्धर्म के रूप में स्वीकार करना पड़ेगा"।[१२]

"ऋतुस्नान के पश्चात् यदि स्त्री पति-विहीन हो तो किसी देवशक्ति का ध्यान कर, किसी श्रेष्ठ पुरुष को, उस देव-शक्ति का प्रतिनिधि मान, उससे देवप्रदत्त संतान प्राप्त करनी चाहिए"।१३

गांधारी का गर्भपात और कौरवों का जन्म:

गांधारी के गर्भपात की घटना का वर्णन लेखक ने पौराणिकता के आधार पर नहीं किया है। कोहली जी ने इस घटना का वर्णन वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है।

कोहली जी ने गांधारी को ईर्ष्या की प्रतिमूर्ति माना है। कुन्ती के पहले पुत्र के पैदा होने पर गांधारी ईर्ष्या से जल उठती है। गांधारी दो वर्ष की गर्भवती थी, परन्तु प्रसव नहीं हुआ था। डाहवश उसने अपनी कोख्र पर प्रहार किया। गर्भपात के लक्षण दिखाई देते ही सत्यवती तत्काल कृष्ण द्वैपायन को बुला लेती है। व्यास के उपचार से गांधारी का रक्तस्राव रुक जाता है। समय आने पर दुर्योधन का जन्म होता है। शिशु को नहला-धुला, उसे स्वच्छ वस्त्रों में लपटकर, परिचारिका उसे गांधारी के पास लिटा देती है, "बहुत सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट बालक है महारानी"![१४]

महाभारत में वर्णित है कि गांधारी की सेवा-शुश्रूषा से सन्तुष्ट होकर महर्षि व्यास गांधारी को वर मांगने के लिए कहते हैं। गांधारी अपने पति के समान ही सौ बलवान् पुत्रों की माता होने का वर मांगती है। समय पर गांधारी को गर्भ रहा, वह दो वर्ष तक पेट में ही रुका रहा। इस बीच कुन्ती के गर्भ से युधिष्ठिर का जन्म हो चुका था। स्त्री-स्वभाववश गांधारी घबरा गई और अपने पति धृतराष्ट्र से छिपाकर उसने गर्भ गिरा दिया। गांधारी के पेट से लोहे के गोले के समान एक मांस पिण्ड मिला। दो वर्ष पेट में रहने के बाद भी उसका यह कड़ापन देखकर गांधारी ने उसे फेंक देने का विचार किया। भगवान् व्यास अपनी योगदृष्टि से यह सब जानकर झटपट गांधारी के पास पहुँचे और बोले, "अरी सुबल की बेटी! तू यह क्या करने जा रही है"?[१५] गाँधारी महर्षि व्यास को सब बातें सच-सच कह देती है। उसने कहा, "भगवन! आपके आशीर्वाद से गर्भ तो मुझे पहले रहा, परन्तु सन्तान कुन्ती को पहले हुई। दो वर्ष पेट में रहने के बाद भी सौ पुत्रों के बदले यह मांस-पिण्ड पैदा हुआ है। यह क्या बात है"। व्यास जी ने कहा, "गांधारी! मेरा वर सत्य होगा। मेरी बात कभी झूठी नहीं हो सकती, क्योंकि मैंने कभी हँसी में भी झूठ नहीं कहा है। अब तुम चटपट सौ कुण्ड बनवाकर उन्हें घी से भर दो और सुरक्षित स्थान में उनकी रक्षा का विशेष प्रबन्ध कर दो तथा इस मांस-पिण्ड पर ठण्डा जल छिड़को"।[१६]

जल छिड़कने पर पिम्ड के सौ टुकड़े हो जाते हैं। प्रत्येक टुकड़ा अंगूठे के पौरुए के बराबर था। उनमें एक टुकड़ा सौ से भी अधिक था। व्यास जी की आज्ञानुसार जब सब टुकड़े कुण्डों में रख दिये गये, तब उन्होंने कहा, "इन्हें दो वर्ष के बाद खोलना"।[१७]

कोहली जी ने महाभारतानुसार गांधारी के पेट से लोहे के गोले

समकालीन हिन्दी-मलयालम कहानी: स्त्री विमर्श

डॉ. उषाकुमारी के.पी.

वर्तमान साहित्य में होनेवाली बहसों में एक महत्वपूर्ण मोड़ स्त्री विमर्श के कारण आया है। कई दशकों से इस बात पर ज़ोर दिया जा रहा है कि औरतों में बदलाव आएगा, यदि वे आर्थिक रूप से संपन्न हो। साहित्य के क्षेत्र में अब महिलाओं की उपस्थिति को कोई अनदेखा नहीं कर सकता। भारतीय लेखन में आज महिलाओं ने अपनी मुख्य धारा बना ली हैं। हिन्दी और मलयालम् दोनों भाषाओं की महिला कहानीकार अपने परिवेश के प्रति सचेत रहती हैं। वर्तमान जीवन के अनुभवों से उभरनेवाली सच्चाइयों को इन रचनाकारों ने निडरता के साथ अपनी कहानियों का विषय बनाया हैं। इनकी कहानियों में आत्मान्मिव्यक्ति की आकांक्षा के साथ ही आत्मसजगता का चरमोत्कर्ष भी देखने को मिलता है। वर्तमान समाज और जीवन के प्रति पैनी नज़र रखनेवाली इन रचनाकारों की कहानियों की विशेषता उनकी अपनी संवेदनशीलता है। वर्तमान दौर में इन दोनों भाषाओं में स्त्री-चेतना से जुड़ी, स्त्री मुक्ति और आस्मिता की पहचान के संघर्ष की महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखी गई है।

समकालीन हिन्दी और मलयालम कहानियों में स्त्री रचनाकारों की चुनी हुई कहानियों पर विचार करने की कोशिश कर रही हूँ। स्त्री की अस्मिता का सवाल एक मौज़ूदा सवाल है। हिन्दी में कृष्णा सोबती की "मित्रों मरजानी" स्त्री मुक्ति और अस्मिता की पहचान की कहानी के रूप में हमारे सामने आई। ममता कालिया ने नारी जीवन के विविध पक्षों को सूक्ष्मता के साथ पहचाना है। उनकी "आपकी छोटी लड़की" कहानी कभी-कभी जीवन की परिस्थितियों से उपेक्षा की शिकार बननेवाली प्रतिभाशाली लड़कियों की कहानी हैं। जया जादबानी की "मैसेंज़र" कंप्यूटर रिश्तों पर लिखी कहानी हैं। चार्चित कहानीकार मधुकाँकरिया के लिए हर रचना जीवन के पक्ष में एक-चीख होती है। उन में खुले जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करने का साहस है।

स्त्री की समस्याओं को पहचानने वाली मलयालम की लेखिकाऐं उन समस्याओं के प्रति अपना शेष कहानियों में रेखांकित करती हैं। भारतीय संदर्भ में मानवीयता से जुड़े नारीवाद के पक्ष में आवाज़ उठानेवाली माधविकुट्टी, सारा जोसफ़, पी. वत्सला, ग्रेसी आदि लेखिकाएँ समाज के प्रति सख्त प्रतिबद्धता के साथ सृजन प्रक्रिया में लगी रहनेवाली हैं। मौज़ूदा व्यवस्था की विसंगतियों को झेलने लायक धैर्य और ताकत रखनेवाले स्त्री-पात्र उनकी कहानियों में है।

कहानियों में हँसी की लहरें फैलानेवाली गीता हिरण्यन ने मलयालम् कथा जगत में अपना स्थान बनाया। हमारे यहाँ सौन्दर्य का विरोध कभी नहीं रहा। विरोध दरअसल सौन्दर्य के बज़ारीकरण और व्यवसायीकरण का है। महिलाओं को व्यापार की वस्तु बनाए जाने का है। गीता हिरण्यन की "असंगठिता" कहानी इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। इन महिला कहानिकारों की कहानियों में पुरुष सत्तात्मक समाज द्वारा शोषित स्त्री का आक्रोश मुखरित है। स्त्री की साहसपूर्ण भूमिका और संघर्षपूर्ण चुनौतियों को इन कहानीकारों ने जीवन रूप दिया है। ज़िन्दगी की जटिलताओं को, उसकी सच्चाइयों को व्यक्त करनेवाली ये लेखिकाएँ पुरुष समाज में अकेली और असहाय रहनेवाली स्त्री की मुक्ति के पक्ष में लेखनी चलाती हैं। बहुत से मिथक जो समाज ने स्त्री के लिए रचे हैं, उन्हें निर्भय होकर, बिना किसी अपराध-बोध के तोड़ने में ये लेखिकाएँ सफल हो गई हैं।

आज का समाज एक जटिल समाज है। उसमें अगणित व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्ध धर्म आदि विद्यमान है। इस गतिशील समाज में ज़रा-सी देर में कुछ-न-कुछ हो जाता है। व्यक्तियों के बीच उनके कार्य और स्थिति में परिवर्तन हो जाता है। आज प्रशासन और उनका कार्यालय आधुनिक जीवन का अंग बन चुका है। भ्रष्टाचार और नैतिक मूल्यों का ह्रास हमें सिर्फ प्रशासनिक व्यवस्था में मिलता है। इसीलिए कहानीकारोकं ने इसे ही अपना निशाना बनाया है। आज़ादी के तिरासठ वर्ष बाद भी प्रशासन की भाषा अंग्रेज़ी है। हमें वह समाज नहीं मिला जिसका सपना गाँधी, नेहरू के साथ-साथ सबने देखा था।

नयी कहानी जीवन से जुड़ कर समाज की पहचान है। समाज में फैली अस्थिरता, अनिश्चयता और अराजकता को अपनी-अपनी तरह

नरेन्द्र कोहली के महाभारतमूलक उपन्यास "महासमर" के प्रथम खण्ड बंधन में पौराणिक संदर्भों का पुनराख्यान....

के समान मांस-पिण्ड का वर्णन नहीं किया है। उनके अनुसार गांधारी ने स्वस्थ दुर्योधन को जन्म दिया था। वे अकेली गांधारी के पुत्रों को संख्या सौ नहीं मानते। उनके अनुसार धृतराष्ट्र के अन्य स्त्रियों के सम्मर्क के उत्पन्न संतानों की संख्या सौ हो सकती है। उन सबकी माता होने का श्रेय गांधारी को मिलना कोई अनोखी बात नहीं क्योंकि गांधारी धृतराष्ट्र की विवाहिता व ज्येष्ठ रानी थी।

सन्दर्भ:

१. महाभारत आदिपर्व ३,४,५,६,७,२९५
२. महाभारत, आदिपर्व, ४,३००
३. बंधन, नरेन्द्र कोहली पृ.स.१७
४. बंधन, नरेन्द्र कोहली पृ.स.१९
५. महाभारत आदि पर्व ४७, ३०८
६. बंधन, नरेन्द्र कोहली पृ.सं.३४
७. श्रीमद्भागवत् पुराण २,५,४४
८. बंधन, नरेन्द्र कोहली पृ.सं.२३
९. महाभारत, आदिपर्व पृ.सं.५७
१०. निर्बन्ध, नरेन्द्र कोहली, पृ.सं.४६०
११. महाभारत, आदिपर्व १५, १७
१२. बंधन, नरेन्द्र कोहली पृ.सं.४१८
१३. बंधन नरेन्द्र कोहली पृ.सं.४१९
१४. बंधन, नरेन्द्र कोहली पृ.सं.४३४
१५. संक्षिप्त महाभारत - आदिपर्व-पृ.सं.५८
१६. संक्षिप्त महाभारत - आदिपर्व - पृ.सं.५९
१७. संक्षिप्त महाभारत - आदिपर्व - पृ.सं.५९

●

'लौटना और लौटना' में जीवन-मूल्यों का अवमूल्यन

डॉ. लीलाकुमारी अम्मा

आठवें दशक की महिला कहानीकार श्रीमती मृदलागर्ग ने विविध जीवन प्रसंगों पर लेखन किया है। वे अपनी कहानियों में वैयक्तिक से सामाजिक और सामाजिक से दार्शनिक की यात्रा करती हुई दिखती हैं। आज़ादी के बाद भारतीय जनता चुनौतियों के दौर से गुज़रने लगा। पंचवर्षीय योजनाओं की असफलता से निर्मित हताशा, नेताओं के क्रियाकलापों से उत्पन्न मोहभंग तथा चीनी आक्रमण एवं भारत-पाक संघर्ष आदि के कारण जीवन-मूल्यों का अवमूल्यन होने लगा। परिणामस्वरूप मानवीय संबन्ध विकृत होने लगे। पारिवारिक संबन्धों में अजनबीपन आने लगा। पुराने जीवनमूल्य आधुनिकता से टकराकर नया रूप धारण करने लगे और मूल्य-संकट निर्माण होने लगा।

स्त्री-पुरुष संबन्धों में परिवर्तन, पारिवारिक-संबन्धों में आत्मीयता का अभाव, विवाह-विच्छेद का मूल्य, शारीरिक पवित्रता का मूल्य, संयुक्त परिवार का विघटन, पुरानी-नयी पीढ़ी का संघर्ष आदि वर्ण्य विषयों और बदलते जीवन-मूल्यों को लेकर कहानी का सृजन होने लगा। इन कहानियों में परंपरागत मूल्यों के प्रति विक्षोभ और नवीन मूल्यों की स्थापना का प्रयास भी मिलता है।

'लौटना और लौटना' में मूल्य विघटन पर क्षोभ व्यक्त किया गया है। इस कहानी के द्वारा यह उद्घाटित करना चाहती है कि अब पति-पत्नी, भाई-बहन, पिता-पुत्र के वह भीगे-भीगे संबंन्ध नहीं रहे जो पहले थे। आज लगभग हर चीज़ आर्थिक संदर्भ में देखी जा रही है। पिता के साथ जुडी आदर, सम्मान, डर आदि की भावनाएँ आज लुप्त होती जा रही है। आधुनिक पुत्र अपने पिता के प्रति अपने स्थापित कर्तव्यों से कहीं भी चिन्तित नहीं है। जिस पत्नी को पति अन्य पुरुष की नज़र से बचाने के लिए परदों के भीतर रखता था उसी का उपयोग वह पैसा कमाने के लिए कर रहा है।

'लौटना और लौटना':

इस कहानी में लेखिका ने विदेश से स्वदेश लौटे और पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंगे एक भारतीय युवक की गाथा कही है। प्रस्तुत कहानी इतनी मार्मिक और प्रभावोत्पादक है कि किशोरवयीन विद्यार्थियों पर भारतीयता के संस्कार डालने हेतु पाठ्यक्रमों में भी नियोजित की गयी है।

मां-बाप का इकलौता बेटा हरीश जब पाँच साल बाद अमरीका से भारत आता है तो उसके माता-पिता बेहद खुश नज़र आते हैं। परन्तु हरीश का व्यवहार उनके प्रति खीज भरा है। उसकी मां तो नाराज होती है। पर पिता जिनका अपना स्वार्थ है बैटे से। वे उसकी हाँ में हाँ करते हैं। पत्नी को समझाकर कहते हैं - लड़का अमेरिका से आया है, तहज़ीब, लियाकत सीखकर, रोशन ख्याल लेकर हमारे गंवारू पिछडे तौर-तरीकें उसे कैसे रास आएँगे? पता है हमसे अच्छी जिन्दगी तो अमेरिका के कुत्ते बसर करते हैं।[३]

समकालीन हिन्दी-मलयालम कहानी: स्त्री विमर्श....

से मन्नू भंडारी, उषा प्रियम्बदा, कृष्णा-सोबती आदि ने व्यक्त करने का प्रयास किया। समकालीन लेखन में कहानी की कमान महिलाओं ने बिलकुल इस तरह संभाली जिस तरह वे अन्य गतिविधियों में मोर्चा संभालती हैं। आज महिला लेखन विश्वविद्यालय का एक महत्वपूर्ण विषय है। कुछ वर्षों के महत्वपूर्ण उपन्यास महिलाओं द्वारा ही रचे गए हैं। आत्माभिव्यक्ति की आकांक्षा के साथ-साथ आत्मसजगता का रेखांकन पिछले पचास वर्षों में महिला-लेखन का केन्द्र-बिन्दु रहा है। जाहिर है महिला-लेखन में विलक्षण, पठनीयता, विश्वसनीयता, जिजीविषा और मार्मिकता के कारण ही हमें इतना विशाल पाठक-वर्ग मिला है।

मलयालम् कहानीकार माधविकुट्टी अपनी कहानियों में आज की भारतीय नारी की बैचेनी, अरमान और आत्मिक खोज को उनके बोध और अबोध के स्तरों में देखने की कोशिश करती है। उनकी चर्चित कहानी "पक्षी की गंध" में सभी आकर्षणों के पीछे डरावने खतरों को पहचाननेवाली नारी का चित्र है। सारा जोसफ़ मानती हैं कि परिवार भी कभी पीड़ा का कारण हो सकता है। लेकिन वे कभी परिवार संस्था को तोड़ने के पक्ष में नहीं है। अपनी "अशोका" कहानी में पुरुष सत्ता के घेरे से जूझनेवाली स्त्री का असली रुप सीता, मंड़ोदरी और शूर्पणखा के माध्यम से दिखाया है। मलयालम लेखिका पी.सुधीरा की "आगमन" कहानी में ऊँचे ओहदों के साथ पति-पत्नी के संबन्ध में पड़ने वाली दरारों के चित्र हैं। "ग्रेसी" ने भी अपनी कहानियों में स्त्रीविमुक्ति के प्रश्न उठाए हैं। पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था के अन्दर सिमटी हुई विवाह, प्रेम, परिवार, मातृत्व जैसी संस्थाओं में उभरनेवाली चुनौतियों को इन्होंने वाणी दी है।

हिन्दी की लेखिका कृष्णा जी ने अपने स्त्री-पात्रों में कभी भी दयनीयता या निरुपायता का चित्रण न कर गौरव और गाम्भीर्य पर बल दिया है। स्त्री के बदलते व मुक्तिकामी सोच कर मृदुलागर्ग की रचनाओं में महसूस किया है। सामाजिक विसंगतियों, विषमताओं और विद्रूपताओं की तीखी अभिव्यक्ति "मंजुल भगत" के लेखन की विशिष्ट पहचान है।

नारी-मनोविज्ञान, सामाजिक विसंगतियों का बोध और उनसे उबरने की बेचैनी ममता कालिया के लेखन की पहचान है। सुधा-अरोड़ा लेखन के साथ-साथ महिला-संगठनों से सक्रिय रुप से जुड़ी हुई है। स्त्री के अस्तित्व और व्यक्तित्व पर आप लगातार लेख लिखती हैं।

अतः महिला कहानीकार की कलम द्वारा महिलाओं की ज़िन्दगी पर फोकस हुई हैं। महिला-विमर्श पर अलग से गोष्ठियाँ और सेमिनार होते हैं। पत्र-पत्रिकाओं की महिला लेखन विशेषांक निकाल कर नया जीवनदान दिया जाता है, उनकी प्रसार-संख्या बढ़ जाती है।

---

१. नयी सदी की पहचानः श्रेष्ठ महिला कथाकार - ममता कालिया

२. औरत के लिए औरत - नासिरा शर्मा

३. साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन - निर्मल जैन

४. यशपाल के कथासाहित्य में चित्रित नारी-पात्र - डॉ.निशा ढवले।

डॉ.उषाकुमारी.के.पी., प्राध्यापिका,
हिन्दी विभाग, एम.जी.कॉलेज, त्रिवेन्द्रम

डॉ. नायर जी की कविता में भारतीयता

डा. जयश्री बी.

समकालीन कविता आधुनिक युग की एक विशिष्ट काव्य प्रवृत्ति है। समकालीन हिन्दी कविता भारतीय यथार्थ की सार्थक अभिव्यक्ति है। "समकालीन" शब्द का प्रयोग काल-सापेक्ष्य है। कुछ लोग छायावादोत्तर हिन्दी कविता को तथा कुछ अन्य लोग उत्तर शती की हिन्दी कविता को समकालीन हिन्दी कविता की संज्ञा देते हैं। समकालीन कविता में मानवीय, संसक्ति की प्रधानता है। "समकालीन कविता" समय और समाज के प्रति प्रतिबद्ध और प्रगतिशील होती है। "समकालीन एक काल में साथ-साथ जीना नहीं है। समकालीनता अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला करती है। समस्याओं और चुनौतियों में भी केन्द्रीय महत्व रखनेवाली समस्थाओं की समझ से समकालीनता उत्पन्न होती है"।[१] समकालीन कविता युगीन यथार्थ और वास्तविकता की सशक्त अभिव्यक्ति है। समसामयिक युग के अंतर्विरोधों, विसंगतियों विषमताओं और विडम्बनाओं को व्यक्त करने में इसकी क्षमता अपार है। यह अतीत की अपेक्षा वर्तमान को स्वीकार करती है। समकालीन कवि को यथार्थ के प्रति अनुराग है, आदर्श से उसे कम संबन्ध है। वे परंपरा के घोर विरोधी हैं। समकालीन कविता के कवि में अपने व्यक्तित्व के प्रति विशेष आग्रह हैं। विषयवैविध्य और नई भाषा शैली के कारण साठोत्तर युग में लिखित कविता को विशेष स्थान मिला।

विविधता में एकता, परस्पर विरोध और विषमता में समता की स्थापना, सत्य की अवधारणा, प्रकृति प्रेम आदि भारतीयता के सृजन में योग देते हैं। समन्वय भावना भारतीयता का प्राण तत्व है। जैसे छोटी छोटी सरिताएँ सागर के साथ मिलकर एक हो जाती है वैसे भारतभूमि पर प्रचलित अनेक भाषाएँ, रीतिरिवाज़, धार्मिक विश्वास सब भारतीयता की भावना में समाहित हो जाते हैं। विख्यात समीक्षक डॉ. नत्थन सिंह ने यों कहा: "भारतीयता भारतभूमि के निवासी के सामाजिक विकास की सतत परिवर्तनशील प्रक्रिया के साथ साथ निरंतर बनती बिगड़ती वैचारिक मान्यताओं का मूर्त रूप हैं"।[२]

भारतीयता की भावना से ओतप्रोत कविताओं की रचना करने में अग्रणी हैं डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर जी। केरल के हिन्दी साहित्यकारों में वे शीर्षस्थ हैं। उनकी प्रतिभा बहुमुखी है। विभिन्न विधाओं में उन्होंने अपनी दक्षता प्रकट की है। वे कई पुरस्कारों से विभूषित हैं। उनकी कविताओं में अतीत के प्रति श्रद्धा और गौरव, भारतीयानुराग, देशप्रेम आदि की सशक्त अभिव्यक्ति होती है। "भारतीय चिन्तन की मूल्यवादी चेतना ही यथार्थ में भारतीयता है। अनेकता में एकता, भेद में अभेद, विश्वराव में सामजस्य और अनेक-रूपता में एकरूपता इसका गुण है। अंधकार से प्रकाश की ओर गमन, संहार से सृजन की ओर प्रस्थान की रुचि और लोकोन्मुखता उसकी प्रकृति है। डॉ. चन्द्रशेखरन नायर इसी भारतीयता की भावना को, साहित्य के फलक पर अंकित करनेवाले परम कुशल कलाकार हैं। इनके नाटक, निबन्ध, कहानियाँ एवं कविताएँ आदि भारतीयता की चेतना से भरे हैं"।[३] नायरजी की काव्यरचनाओं में प्रमुख है कविताएँ देशभक्ति की। इस काव्यसंग्रह की हर एक कविता देशप्रेम से ओतप्रोत है।

"नेहरु को श्रद्धाँजलियाँ शीर्षक कविता आदर्श निष्ठ महापुरुष जवाहरलाल नेहरु की मधुर स्मृति पर आधृत है। कवि की राय में नेहरुजी

'लौटना और लौटना' में जीवन-मूल्यों का अवमूल्यन.....

पिता के अपने बेटे से अनेक अपेक्षाएँ हैं। अमरीका से हरीश आते समय काफी पैसा साथ में लाया होगा। उन पैसों से फूलबाग वाली जमीन पर अगर मकान बन जाएगा तो सिर पर छत रहेगी। पिता की यह भी इच्छा है कि उसकी किसी अच्छी जगह शादी हो जाए, दान-दहेज मिल जाएँगे तो दहेज के रुपयों से मकान बन जाए। इसप्रकार पिता अपनी आकांक्षाओं, स्वार्थ और लालच के कारण अपने पितागत मान-सम्मान और स्वाभिमान को भुलाकर, स्वयं उसकी ख़ातिरदारी करते हैं, उसे बेड टी पहुँचाते हैं। उनके सामने रहीश के सिगरेट पीने पर भी कोई आपत्ति नहीं जताते।

एक दिन पिता हरीश के सामने शादी का प्रस्ताव रखते हैं तो हरीश कहता है - 'शादी के लिए मुझे अमरीकन लड़कियाँ बिलकुल पसंद नहीं', उनके साथ आदमी रिलैक्स नहीं कर सकता। हरदम तनाव बना रहता है। हज़ार मांगे होती हैं उनकी। हर तरह आदमी के साथ बराबरी करना चाहती हैं।[१] हरीश को शादी के लिए लडकी डॉक्टर और सैक्सी चाहिए। डाक्टर होगी तो काफी पैसा कमा सकेगी, यह हरीश का आर्थिक दृष्टिकोण है। हरीश द्वारा पिता के सामने निःसकोच रूप से लड़की के सैक्सी होने के बारे में कहना उसकी अमरीकन भोगवादी प्रवृत्ति का परिणाम है।

हरीश का यथासमय विवाह हो जाता है। वह मकान भी बनवा लेता है। पर बाबूजी का अपने मकान में रहने का स्वप्न पूरा नहीं हो पाता। कारण जाते समय हरीश किराये पर दे देता है। किराये के पैसे अपने नाम से बैंक में जमा कराने की व्यवस्था भी कर जाता है।

निष्कर्ष:

इस तरह कहानी में अंत का विधान समाहार मूलक है, जो पिता की संवेदना को गहरा आघात पहुंचाता है। कहानी पिता-पुत्र के पारिवारिक संबन्धों में आए बदलाव को, पारिवारिक सदस्यों के स्वार्थ को उद्घाटित करती है। इस कहानी के संबन्ध में विट्ठल सारडा की राय है - कहानी में लेखिका ने युवकों पर पाश्चात्य संस्कृति का भूत किस प्रकार सवार होता जा रहा है और विदेशी सभ्यता ने भारतीय परिवारों को तोडने में किस प्रकार सहयोग दिया है, उसका यथार्थ चित्रण इस कहानी में चित्रित किया है।[३]

वृद्ध माता-पिता की सेवा करने वाले कर्तव्यनिष्ठ श्रवणकुमार के "मिथ" की टूटन और जीवन मूल्य के विघटन को कहानी में देखा जा सकता है।

---

१. कितनी कैदें - मृदलागर्ग, पृ.३१

२. कितनी कैदें - मृदलागर्ग, पृ.७०

३. सातवें दशकोत्तर कहानियों में पारिवारिक संबन्ध-डॉ.विट्ठल सारडा, पृ.९९

डॉ. लीलाकुमारिअम्मा, मुल्लुविला घर, वेस्ट डू.बी.टीएस, आट्टिंगल, असोसिएट् प्रोफसर, श्रीनारायण कॉलेज,कोल्लम

अमर ज्योति है जिसके कारण इतिहास भी अमर हो गया है।

हे अमरज्योति तुम कारण
इतिहास बना है चरितार्थ"।[४]

इस अराजक युग में जनकोटि के राजाधिराज अतुल मानवावतार ही नहीं, प्रिय रामावतार के रूप में उन्होंने नेहरुजी को माना। प्रस्तुत कविता में कवि का विश्वमानवतावादी स्वरूप उभर आता है। इसमें लोकजीवन और मानवमहत्व का प्रतिपादन किया है। नेहरुजी ने देश का नवनिर्माण कर लिया उनको जन्म देकर भारतभूमि धन्य हुई है।

"एक देश का तुमने कर लिया नव निर्माण!
हम धन्य है, हमारी जननी
मातृभूमि धन्य है, कि हमने
अपनी ही आँख्रों
मानव के ही रूप तुम्हें देख्रा है!!"

नायरजी की कविताएँ लोकमंगल की भावना से संपुष्ट हैं। उनकी कविता "प्रहरी, माँ के संपूत!" में अपार देशप्रेम, सृष्टि के प्रति उदारभाव, महानता के प्रति आकर्षण और अमर मातृत्व का संदेश प्राप्त होते हैं। माँ के सपूत के कारण देश की अख्रण्डता की स्थापना हुई। देश के गौरव को बनाए रख्रने में वे सफल हुए और देश सनाथ हो गया।

"हम तो आज तुम्हारे कारण रहते हैं सानन्द सनाथ।
हम हैं आज तुम्हारे कारण अपने गौरव से नहीं वंचित"।[५]

हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी के महत्व के संबन्ध में: कवि ने अपना विचार हिन्दी के प्रति कविता में प्रकट किया।

"हिन्दी मधुर तेरी थी
रुचिर कल्पना भी
तू रही थी आदर्श
मेरे जीवन के सार क्षणों में!"[६]

हिन्दी भारत की भावात्मक एकता का सुदृढ सेतु है। इसलिए ही हिन्दी भाषा भारतीयता का प्रतीक बन गयी।

'हुँकार भर दो नगपति' में कवि गरिमामय, चिर तुषार वेष्टित नगपति के सम्मुख्र प्रणाम करते हैं। कवि हिमालय को जगती का आश्चर्य और हमेशा मनुष्य को महिमा का पाठ सिख्राने योग्य मानते हैं। कालिदास ने इस कारण से ही नगपति को पृथ्वि का 'मानदण्ड' कहा है। हिमवान् को देख्रकर महापुरुषों में संयम का बोध होता है। कवि हिमालय का विराट स्वरूप, उसकी दिव्यता एवं उसकी गरिमा की पहचान कराते हैं। हिमालय भारतीयता का मूर्त रूप है। वह जगतीतल की सभ्यता और इतिहास के चिरसाक्षी हैं। इस कविता के माध्यम से कवि ने विश्वोत्तर भावों वाला भारत का परिचय दिया है। इसके द्वारा कवि ने भारत की महान् संस्कृति, उसके उदात्त आदर्श सभ्य आचरण और श्रेष्ठ गुणों का वर्णन किया है। कवि विश्वशांति चाहते हैं। शांति की भावना भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। युद्ध के विरुद्ध कवि अपना आक्रोश प्रकट करते हैं। उनकी राय में युद्ध का परिणाम शांति के अनुकूल नहीं है.

"हम चाहते हैं, कभी किसी से
युद्ध करने का अवसर न पावें
युद्ध शांति का सदुपाय नहीं है
युद्ध का परिणाम शान्ति के अनुकूल नहीं है"।[७]

उपर्युक्त पंक्तियों से कवि का शांतिवादी दृष्टिकोण स्पष्ट झलकता है।

'गरिमामयी भारत जननी' में श्रेष्ठ कवि नायरजी ने "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना पर जोर दिया है। इस कविता के माध्यम से कवि समस्त जगत की मंगल कामना में सदैव आशा विश्वास लिए विराजती भारत जननी की पहचान कराते हैं। कवि का विश्वानवतावादी स्वर यों सूँज उठता है-

"जननी जन्मभूमिश्च
स्वर्गादपि गरीयसी
शुभे रत्न गर्भे।
समस्त जगत की
मंगल कामना में
सदैव आशा विश्वास लिए
निर्द्वंत निर्वैर्य तुम विराजती हो
वसुधा को अपना परिवार मान"।[९]

नायरजी का ख्रण्डकाव्य "हिमालय गरज रहा है" भारतीय संस्कृति की जीवन गाथा है। प्रस्तुत ख्रण्डकाव्य देशभक्ति और राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत है। हिन्दी काव्य क्षेत्र में यह ख्रण्डकाव्य सचमुच अनमोल रत्न है। इस कविता में कवि श्रेष्ठ पुरुषों की याद आदरपूर्ण भाव से करते हैं। हिमालय युग-युगों से मानवजीवन गाथा का साक्षी है, भारत के अतीत का साक्षी है। भारत की उदार मानवताबादी परंपराओं का यशोगान कवि ने हिमालय के मुख्र से कराया है। इस देश में वीरों की कभी नहीं, जिसने किसी पर भी आक्रमण नहीं किया।

"मुझे ज्ञात है इस भारत ही
देश है, जिसने किसी पर भी
आक्रमण नहीं किया, हालाँकि
वीरों की न कमी थी कदापि।[१०]
मुझे याद है भारत ही इक
जनपद, जिसने सर न झुकाया
डरकर अन्यायी के आगे,
सतत अहिंसा उसका नारा"।[११]

प्रस्तुत कविता भावात्मक एकता का परिचायक है।

संक्षेप में कहे तो नायरजी की उपर्युक्त समस्त कविताएँ भारतीयता से अनुप्राणित हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में विश्वशांति, लोकमंगल की भावना और देशप्रेम को उचित और महत्वपूर्ण स्थान दिया। उनकी राष्ट्रीय भावना "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना पर आधृत है। देश और जनता की मंगल कामना वे सदैव रख्रते हैं। मानवमूल्यों को कायम रख्रने के लिए उनकी पुनः स्थापना के लिए अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने जो प्रयत्न किया है, वे अत्यन्त सराहनीय है।

डॉ.जयश्री बी., प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग,
एम.जी.कॉलोज, त्रिवेन्द्रम

---

१. *डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय, समकालीन सिद्धान्त और साहित्य-पृ.१६*
२. *डॉ.एन.चन्द्रशेख्ररन नायर: संवेदना और अभिव्यक्ति-संपादक*

"पचपन खम्भे लाल दीवारें में रुकती सुषमा न रुकती राधिका" षमषाद बीगम आर.

देशी और दिवेशी परिवेश की भावभूमि पर स्त्री-पुरुष के संबन्धों और मानव मूल्यों का अंकन ही उषा-प्रियंवदा के लेखन की बुनियादी है। ये आधुनिक भारतीय जीवन की उदासी, अपरिचितता, अकेलेपन की भावना को केद्रीभूत करते हैं; विशेषकर इनका इलाका साठोत्तर युग की नारी की उभरती हुई मानसिकता तथा उसके अर्ह पर है। उसे समर्थन करने का तर्ज भी पारदर्शी है।

सभ्यता के नाम पर आधुनिकता की आँधी में नैतिक मूल्यों की बडी तेज़ी से तब्दील हुई है। फिर भी कुछ नारियाँ ऐसी हैं जिन्होंने जीवन के कर्तव्य और भावना को गंभीर दृष्टिकोण में देखा है। 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' की सुषमा नील से प्यार करती है मुदा परिवार की हालात उसे जुदाई के हाषिये पर खडा कर देती है। उसके चारों ओर दीवारें हैं - उत्तरदायित्व की, परिवार की, पद एवं तज्जन्य गरिमा की और शायद भीतरी कुंठा की भी। एक महिला विद्यालय में अध्यापिकका तथा हास्टल-सूपरिन्टेन्ड के तौफीक तक उसकी तैनात होती है। फिलहाल अपनी हालत स्पष्ठ करते हुए नील से कहती है - 'यह नौकरी मेरे लिए बड़ी कीमती है। इसलिए मैं कह रही थी कि मेरी ज़िन्दगी खत्म हो चुकी है। मैं केवल साधन हूँ... विवाह करके परिवार को निराधार छोड़ देना मेरे लिए संभव नहीं है'।

अविवाहित लड़की जब कमाने लगती है तो घर परिवार की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ओढ़ लेती है। इसके बदौलत वह मुक्ति न पा सकती न माता-पिता उसके भावी जीवन के विषय में सावधानी उठाते। सुषमा एक ऐसी ही नारी है जो माता-पिता के खातिर अपनी खुशियाँ और खाहिशों की कुर्बानी देती है।

मूल्यों के टूटन की प्रक्रिया नगर और महानगरों में ज़्यादा दिखाई पडती है। यहाँ व्यक्ति को अपना अस्तित्व खोने का डर है। हर एक व्यक्ति अपना जीवन अपने अनुसार सजाना चाहता है। परन्तु समाज में रहकर वैयक्तिकता कुछ समय बाद एकाकी और अजनबीपन में तब्दील हो जाती है। 'रुकोगी नहीं राधिका' में एक भारतीय नारी की दुविधा को आधार बनाया गया है। अमेरिका की कश्मकश भरी रोज़ रफ्तार की ज़िन्दगी में राधिका फँस जाती है। शादी के चार-पाँच साल बाद ही उसकी तमाम खुशियाँ खत्म हो जाती है क्योंकि प्रणव का संबन्ध कई स्त्रीयों से था। वह उसे तलाक देता है। उसने अकेलापन अपनाया है और उसके अजनबीपन में आधुनिकता का बोध उजागर होता है। विदेशीवातावरण ने उसके दबाव को मिजान लगाया है। उसे अपना जीवन निरर्थक लगने लगता है। पिता का दूसरा विवाह, विदेशी पत्रकार डैन से सरोकार तथा उसके साथ अमेरिका चला जाना, डैन से उसकी खरिज होना आदि उसके कटेपन की भयानकता को उछालती है। एकदम उसकी ज़िन्दगी को उलट-फेरती है। ज़ाहिर है यही नौबत उसके मानसिक उलझनों का उपज है। तनाव, कुंठा और निष्क्रियता जो आधुनिकता की देन है उससे राधिका का चरित्र नाइनसाफी न बरतता। फिर भी उसकी मनोदशा में स्वतन्त्रता है। बेशक प्रस्तुत उपन्यास नारी-पुरुष संबन्धों का एक नया अहसास उभारता है।

इन पात्रों के जीवन की सबसे उभडी हुई जटिल समस्या प्रेम तथा विवाह की है। डैन के अतिरिक्त राधिका के जीवन में आनेवाले दो अन्य पुरुषों में अक्षय और मनीष हैं। भारत आने के पश्चात् उसका मन उन दोनों के प्रति झुक जाता है। राधिका एक आधुनिक बौद्धिक नारी है जो दो संस्कृतियों के बीच में पिसकर अपनी दिशा तय नहीं कर पाती है। इस यात्रा के दौरान अपने अस्तित्व तथा स्वातंत्र्य की खोज में भागती है। अपने व्यक्तित्व के प्रति सजग आत्मविश्वास से भरी हुई राधिका कहीं अपनी जड़े जमा नहीं पाती। यह तथ्य निर्विवाद रूप से स्थापित हो चुका है कि मानव की जो प्रवृत्तियाँ वंशानुक्रम से संस्कार रूप से प्राप्त हुई हैं, उनमें यौन प्रवृत्ति का सबसे अलग अपना महत्व है। मानव जीवन में यौन प्रवृत्ति अत्यधिक महत्वपूर्ण दिखाई देती है। राधिका भी विवाह पूर्व यौन संबन्ध स्थापित कर भविष्य के लिए एक प्रश्न चिन्ह बन जाती है। सारी ज़िन्दगी तृप्ति और सुख की खोज में देश-विदेश भटकती रहती है। वह असामान्य है... वह अपनी माँ की मृत्यु के पश्चात् पिता को ही अपना सब कुछ मान बैठती है। उसके मन में पिता के लिए अत्याधिक झुकाव है। वह कहीं न कहीं अचेतन रूप से अपने पिता के साथ दैहिक धरातक पर जुड़ी हुई है और शायद यही कारण है कि विमाता आ जाने पर वह भीतर ही भीतर उससे जलने लगती है और अपनी विमाता को अकेले कमरे में सोते देखककर तसल्ली महसूस करती है। वह अपने पिता की विद्वता, शालीनता और सभ्यता से अधिक प्रभावित है। मनोविज्ञानवेत्ता इसे बद्धत्व ग्रन्थि के नाम से पुकारते हैं।

उसके जीवन में डैन, मनीष, अक्षय अपने पूरे पुरुषार्थ के साथ

डॉ. नायर जी की कविता में भारतीयता.....

डॉ.अमरसिंह बधान-पृ.३३

३. *डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायरः संवेदना और अभिव्यक्ति-संपादक डॉ.अमरसिंह बधान-पृ.३३*

४. *कविताएँ देशभक्ति की-डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर-पृ.२४*

५. *वही-पृ.२५*

६. *कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर-पृ.२७*

७. *वही-पृ.३३*

८. *कविताएँ दैशभक्ति की-डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर पृ.४३*

९. *कविताएँ-देशभक्ति की-डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर-पृ.४६*

१०. *वही-पृ.८२*

११. *कविताएँ देशभक्ति की-डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर-पृ.८३*

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

१. कविता का यथार्थ-संपादक डॉ.ए.अरविन्दाक्षन

२. डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायरः संवेदना और अभिव्यक्ति - संपादक - डॉ.अमरसिंह बधान

३. कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर ●

आते हैं। राधिका का डैन के प्रति आकर्षण स्वाभाविक न होकर एबनोर्मल था। एक स्थान पर डैन कहता है "तुमने कभी एक क्षण के लिए भी प्यार नहीं किया राधिका, तुम मुझमें अपना पिता ढूँढ़ रही थी.... पर शायद हम दोनों सफल नहीं हुए"। डैन उसे हिमकन्या कहता है।

राधिका की ग्रन्थि को उद्घाटित करते हुए मनीष कहता है "यानी कि तुम पुरुष में पति या प्रेम नहीं पिता ढूँढ़ती थी। जीवन के एक संघर्षमय क्षण में डैन ने तुम्हें संभाला, तुम कृतज्ञता में उसके साथ रहने लगीं, अब अक्षय देखभाल कर रहे हैं तो शायद विवाह कर लो...। क्योंकि तुम जीवन में लंगर चाहती है"।

पिता के दूसरे विवाह के पश्चात् राधिका अपने अस्तित्व को उस घर में निरर्थक समझती है। 'मैं अभी विवाह करना नहीं चाहती... मैं जो चाहूँगी कही करूँगी'। यह साफगाई राधिका के असहनीय मानसिक द्वन्द्व का परिचायक है।

राधिका एक असामान्य नारी चरित्र है। डैन का कथन है - 'माँ के मरने के बाद तुम्हारा पिता के प्रति लगाव बहुत कुछ एबनोर्मल हो गया। यदि भारतीय परिवेश में तुम्हें प्रारंभ से ही युवा मित्र बनाने की सुबिधा होती तो ऐसा न होता... तुमने अपने ही बनाये दुःख के खेरे में अपने को बाँध लिया है... ठीक है पिता ने दूसरी शादी कर ली, तुम भी सीमाओं से निकलो, दुनिया देखो, अपनी संभावनाओं को विकसित करो'। लेकिन राधिका ऐसा न करके दमन को अपनाती है, जिसके फलस्वरूप उसमें अनेक मानसिक विचित्रताएँ (मेंटल कॉम्पलेक्सज) पैदा हो जाती है जो मनोविच्छेद (मेंडल डिसोसिएशन) को जन्म देती है। मनीष में भी उसे पिता की छवि नज़र आती है।

राधिका स्वतंत्र विचारों की लड़की है। अपनी व्यक्तिगत स्वतत्रता के लिए वह पापा से भी लड़ पड़ती है। भारत छेड विदेश जाने का निर्णय बिना किसी आधार के उसका अपना फैसला होता है। उसका सोचना है कि माँ-बाप की उँगली पकड कर चलने के कारण ही लड़कियों का चरित्र पूर्णतः विकसित नहीं हो पाता - माता - पिता अपने ही विचारों को उनपर थोपते रहते हैं। वह कहती है - मैं स्वेच्छापूर्ण जीवन की इतनी आदि हो गई हूँ कि विघ्न सह नहीं पाती। वह मुक्त आसंग के फलस्वरूप मनोविक्षेप (साइकोसिस) के रोगी की तरह व्यवहार करती है। बाह्य जगत से बहुत कम मतलब वह रखती है। वह अधिकतर कल्पना लोक में ही विचरण करती है। सामाजिक आदान-प्रदान में उसकी कोई आस्था नहीं है। राधिका यह निश्चय नहीं कर पाती कि क्या सही है क्या गलत।

इधर किशोरी अवस्था में एक पडोसी लड़के नारायण से सुषमा का भावात्मक संबन्ध जुडा था। कालान्तर में उसके जीवन में नील प्रवेश करता है। अपने से पाँच साल छोटे नील को स्वीकारने में खुद असमर्थ पाने लगती है। वस्तुतः सुषमा अपनी उन विषम परिस्थितियों के सामने भी अवश और निरुपाय है जो उसके प्रेम में बाधक है। उसे तो अपने परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाना भी है। नील को भूलने के उपक्रम में सुषमा स्वयं टूटने लगती है।

भारतीय नारी प्रेम और विवाह में एक प्रकार असमंजसपूर्ण स्थिति को झेलती है। वैवाहिक संबन्धों में अब कोई पावन नैतिकता नहीं रह गई है। यान्त्रिक जीवन में उदासी, ऊब और ठंडा टहराव बड़ी जल्दी आ जाता है। स्त्री चाहे जितनी भी पड़ी लिखी क्यों न हो फिर भी वह वंचित ही रहती है। पुरुष ने अपनी मेधा को उसपर जकड़ाकर उसे कभी भी मुक्ति नहीं दिलाता। यह सच है कि आज की नारी काँच की मूरत नहीं रह गई है, वह एक जीवित-हकीकत बनकर समाज का अविभाज्य अंक बन चुकी है, लेकिन तिस पर भी वह छली जाती है या यूँ कहा जाए कि अभी उसको मात्र भोग्या ही समझा जाता है, वह अलग बात है कि उषा प्रियंवदा ने अपने उपन्यास रुकोगी नहीं राधिका में यथार्थ धरातल पर पुरानी मान्यताओं को चुनौती दी है।

आज व्यक्ति अकेला खडा है। वह एक साथ कई टुकडों बाँटकर बैतरह जी रहा है। तनाव अतृप्ति और असंतोष में जीनेवाला वह परिवार में रहकर भी अकेला है। शिक्षा, संस्कार, रुचि और स्वभाव के भेद पति, पत्नी, भाई, बहन, माता-पिता किसी के भी साथ सामंजस्य करने में पहले नामजूरी, बाद में टूटन अनुभव करता है। इसी कारण संबन्धों में जटिलता, बेताबी, तथा अन्तविराध उतक्पन्न हो रहा है।

स्त्री-पुरुष के संबन्धों और मानव मूल्यों का सही अंकन करती ये कथाएँ आज के पारिवारिक परम्परागत मूल्यों के टूटन की है। अकेलापन के संबन्ध में डॉ इन्द्रनाथ मदान लिखते हैं - अकेलापन का बोध बहुत पुराना है। मध्यकालीन है। शायद इससे भी पहले का है। उपनिषदों में भी आँका जा सकता है। आज का अकेलापन मध्यकालीन या रोमांटिक अकेलापन से भिन्न कोटि का है। मध्य युग में यह आत्मिक स्तर पर है। रोमांटिक युग में वैयक्तिक स्तर पर और आधुनिक युग में स्थिति नियति के स्तर पर।

आधुनिक नारी स्वतंत्र है। वह समाज के सभी बन्धनों से मुक्त होकर अपना अस्तित्व ढूँढ़ना चाहती है। जीवन की संकीर्णताएँ राधिका से आत्म-साक्षात्कार का अवसर छीन लेती है जबकि सुषमा के सामने आत्मनिषेध का एकमात्र रास्ता बचा था। नतीजा यह निकला कि इस, खम्भे दीवारों को तोड़कर राधिका भाग जाती है और सुषमा उसी में कैद होती है।

संदर्भ:

१. उषा प्रियंबदा-पचपन खम्भे लाल दीवारें
२. उषा प्रियंबदा- रुकोगी नहीं राधिका
३. वंदना केंगरानी-निर्मल वर्मा के स्त्री विमर्श
४. डॉ इन्द्रनाथ मदान-आधुनिकता और हिन्दी साहित्य
५. डॉ. ज्ञान आस्थान-हिन्दी कथा साहित्य; समकालीन संदर्भ

षमषाद बीगम आर, टि.सी.२४/१००५,
एम.आर.ऐ.१९८, तैय्काड, त्रिवेन्द्रम-१४

भारतीयम

अनन्तपुरी के प्रथितयश राष्ट्रीय कार्यकर्ता एवं सांस्कृतिक विचारधारा के कुल गुरु श्री.के.रामनपिल्लै के नेतृत्व में सम्पादित होने वाली एक प्रशस्त पत्रिका है भारतीयम। अनेक विद्धान लेखकों से सुरुचिपूर्ण एवं स्मरणीय लेखों और आकर्षक विषय की साहित्यिक सम्रग्रियों की संवाहिका है भारतीयम। मलयालम भाषा के प्रख्यात साहित्यिक मनीषियों का सम्पादकत्व इसे सुलभ है। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी भारतीयम के उज्ज्वल के भविष्य की शुभकामना करती है। **सम्पादक**

डॉ. चन्द्रशेखरन नायर: दो भाषाओं के बीच पुल

जो केरल के प्रेमचंद हैं

(मलयालीभाषी होने के बावजूद करीब पांच दशक से हिंदी लेखन और अनुवाद में लगे चंद्रशेखरन नायर को केरल का प्रेमचंद कहा जाता है। उनकी बासठ पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनसे रमा उन्नितान की बातचीत)

सत्तासी साल की उम्र में भी डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर अपने सारे काम खुद करते हैं। कॉलबेल बजाने पर दरवाजा खुद ही खोला। हृष्ट-पुष्ट शरीर और हंसमुख चेहरा। वे विनम्रता की प्रतिमूर्ति हैं। कमरे में प्रवेश करते ही ऐसा लगा कि मैं उनके श्रीनिकेतन में नहीं टैगोर के शांतिनिकेतन में खड़ी हूं। बहुत ही अनौपचारिक माहौल में बातचीत शुरू हुई। सत्तासी वर्षीय मलयाली भाषी हिंदी लेखक डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर हिंदी और मलयालम भाषा में लेखन के साथ-साथ अनुवाद और केरल राज्य में हिंदी के सघन प्रचार-प्रसार के लिए भी जाने-जाते हैं। सन् १९५८ में काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एमए और १९७७ में बिहार विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि प्राप्त करनेवाले डॉ. चन्द्रशेखरन ने सभी विधाओं में लिखा है और हिंदी में उनकी ६२ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

हिंदी भाषा के प्रसार और साहित्य में योगदान के लिए उन्हें सात राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों सहित कुल ५५ सम्मान मिल चुके हैं। वे लेखक के साथ-साथ अच्छे चित्रकार भी हैं। उनसे बातचीत के प्रमुख अंश:

आपने लिखना कब से शुरु किया ?

ठीक-ठीक कोई तिथि बताना संभव नहीं। लेकिन पचास से अधिक वर्ष तो हो ही गये हैं।

आपकी मातृभाषा मलयालम है फिर भी आपने हिंदी को अपनाया, तो उसके कुछ तो कारण होंगे ?

जब मैं शास्तानकोट्टा में रह रहा था, तभी वहां राघवन नाम के एक अध्यापक आये, जो हिंदी प्रचारक थे। हिंदी पढ़ना उन्हीं के मार्गदर्शन में शुरु किया। अब धीरे-धीरे यहां तक पहुंचा हूँ। वैसे मलयालम में भी लिखा है। संस्कृत से अनुवाद भी किया है। परंतु मेरा अधिकांश लेखन हिंदी में है।

आपको केरल का प्रेमचंद कहा जाता है क्यों?

मेरठ के जनता वैदिक कॉलेज के एक प्रोफेसर ने मेरी जीवनी लिखी है। उन्होंने ही सबसे पहले मुझे केरल का प्रेमचंद कहा।

आजकल क्या लिख रहे हैं ?

विश्व प्रथम ग्रंथ नामक एक किताब लिख रहा हूँ। इन दिनो उसी में व्यस्त हूँ।

आप साहित्यकार के साथ-साथ एक अच्छे चित्रकार भी हैं। यह कला कहां से सीखी?

शास्तानकोट्टा स्कूल में एक अध्यापक थे, रामकृष्ण अय्यर। चित्रकला की प्रारम्भिक शिक्षा मुझे उन्होंने ही दी। आगे चल कर इसके लिए मुझे कई पुरस्कार भी मिले।

सत्तासी साल में भी आप इतने तंदुरुस्त हैं, इसका रहस्य क्या है?

अब भी रोज शाम में सात बजे तक आसपास एक घंटा योगाभ्यास करता हूँ। इसके अलावा शाकाहारी और अच्छा ईश्वर भक्त हूँ। इसलिए इस उम्र में भी स्वस्थ रहता हूँ।

(दि पब्लिक एजेंडा नई दिल्ली से साभार)

श्री अक्षरगीता

(ग्यारवाँ अध्याय के बाकी)

डॉ. वीरेन्द्रशर्मा

नाश हेतु अतिवेग-पतंग
घुसते ज्यों दीप्तानल में
नाश हेतु अतिवेग, आपके
घुसते सब त्यों वक्त्रों में
हैं प्रदीप्त सब वक्त्र आपके
जिनका ग्रास पूर्ण संसार
सभि ओर से आप ग्रास वह
चाट रहे हैं बारंबार
है प्रकाश अति उग्र आपका
फैला जग में तेजप्रताप
अखिल विश्व को तपा रहे हैं
जिससे ही हे विष्णो! आप.
उग्ररुप में आप कौन हैं
मुझे बताएं यह संबाद
नमन आपको है, देवोत्तम,
दे दें अपना कृपा-प्रसाद
जान सकूं मैं तत्व आपका
है विशेष इच्छा ऐसी
आतिपुरुष, मैं प्रवृत्ति आपकी
नहीं जानता, है कैसी

श्री भगवान बोले-

मैं हूं काल लोकक्षयकतां
किए हुए व्यापक विस्तार
यहां इस समय आया हूं मैं
लोकों का करने संहार
प्रतिपक्षी सेना में योद्धा
खड़े हुए हैं जितने भी
रह पायेंगे नहीं शेष अब
वे सब बिना तुम्हारे भी.
इसीलिए तो उठ जाओ अब
प्राप्त करो तुम कीर्ति अशेष
शत्रु विजित कर भोगो तुम फिर
पार्थ राज्य समृद्ध अशेष.
सबके सब ये मेरे द्वारा
निहत हुए हैं पहले ही
तुम तो बस हो जाओ केवल
निमित्त मात्र उन सबके ही.
भीष्म, जयद्रथ, द्रोण कर्ण सब
युद्धवीर मेरे मारे, मारो,
निर्भय लड़ो युद्ध में
जीतोगे तुम रिपु सारे

संजय बोले-

सुनकर यह वाणी केशव की
भय से कंपित, जोड़े कर
माधव से बोले यों अर्जुन
पुनः नमन कर गदगगद स्वर
कीर्तनं कर जग, उचित, आपका
पाता मोद, प्रेम भगवन
राक्षस दौड़े भय से दिशि दिशि
सभी सिद्धगण करें नमन
गुरु के गुरु विधिजनक महात्मन
सत् भी असत् परे हे अक्षर
नमन करें क्यों नहीं सिद्धगण
हे अनंत, जगधाम, सुरेश्वर
आदिदेव हैं पुरुष सनातन
परम धाम, आश्रय हैं आप
ज्ञाता, ज्ञेय, अनन्त आपका
व्याप्त जगत में रुप-प्रताप
आप अग्नि हैं, यम हैं, शशि हैं
आप प्रजापति, वरुण, पवन
प्रपितामह भी, नमन आपको
नमन सहस्त्रों, पुनः नमन
नमन आपको अग्र, पृष्ठ में
सभी दिशाएं सभी प्रकार
शक्तिअनंत, अमितविक्रम हैं,
सर्वरुप, जग के आधार
जाने बिना आपकी महिमा
सखा मानकर केवल ही
हे यादव! हे कृष्ण! सखा हे!
जो कुछ भी हो बात कही
प्रीति भाव अथवा प्रमाद से
चलते सोते भोजन में
एकाकी या सबके सम्मुख
हास हेतु अनजाने में
जो अपराध किए हैं मैंने
किया आपका जो अपमान
हे अच्युत, वे क्षमा करें सब
अपरिमेय हैं आप महान
पिता आप जड़ चेतन जग के परम
पूज्य गुरु परम महान
अतुलप्रभावी, त्रलयोकों में
अधिक कौन, जब नहीं समान
करके दंडप्रणाम चाहता
देवेश्वर रीझें यों आप
पुत्र, सखा, पत्नी के सहते
पिता, सखा, पति ज्यों संताप
हर्षित हूं वह रूप देखककर
पहले देखा नहीं जिसे
एवं अतिशय व्यथित हो रहा
मेरा मानस है भय से
देवरुप ही अतः वही फिर
अपना मुझको दिखलाएं
जगनिवास, देवेश्वर मुझ पर
पूर्ण तुष्ट अब हो जाएं.
गदा मुकुट हो चक्र हाथ में
रुप आप वह दिशलाएं
भुजसहस्त्र हे विश्वरुप फिर
आप चतुर्भुज हो जाएं

श्री भगवान बोले-

मैं प्रसन्न हूं इसीलिए तो
तुमको दिखलाया यह रुप
आत्मयोग से मैंने अर्जुन,
अपना अतिशय परम स्वरुप
तुम्हें छोड़कर नहीं किसी ने
पहले देखा है यह रुप
तेजोमय है आदि सभी का
है असीम जो विश्व स्वरुप
नहीं ज्ञान से नहीं यज्ञ से
नहीं दान अध्ययन से भी
नहीं क्रियाओं से संभव है
नहीं उग्र तप करके भी
कुरुप्रवीर! इस मर्त्यलोक में
ऐसा मेरा परम स्वरुप
तुम्हें छोड़कर नहीं किसी ने
पहले देखा है यह रुप
नहीं व्यथित हो और न मोहित घोर
रुप मेरा लखकर
देखो रुप वही फिर मेरा
निर्भय प्रीतियुक्त होकर

संजय बोले-

माधव ने अर्जुन से यों कह
दिखलाया फिर अपना रुप
भीत पार्थ को आश्वासन दे
होकर फिर अति सौम्य स्वरुप

अर्जुन बोले-

स्थिरचित्त हो गया अब मैं
रुप आपका लख ऐसा
कृष्ण, स्वस्थ हूं, पुनः देखकर
मानुष रुप सौम्य वैसा

श्री भगवान बोले-

मेरे जिस स्वरुप के दर्शन
पाये तुमने अभी अभी
अतिशय दुर्लभ, दर्शन उसके
सदा चाहते देव सभी
नहीं दान से और न मख से
तप से नहीं न वेदों से
दर्शन है वह संभव मेरा
प्राप्त किया तुमने जैसे
तत्त्वरुप से मुझे देखना
पाना तथा समझना ही
पूर्ण समर्पण भक्तिभाव से
अर्जुन, संभव ऐसे ही
निरासक्त है मुझमें तत्पर
मेरे लिए कर्म करता
बैररहित सबसे जो, अर्जुन
मेरा भक्त मुझे पाता

(वसुन्धरा एनक्लेव, दिल्ली)

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का ३१ वाँ वार्षिकोत्सव अक्तूबर २०११ को संपन्न होगा

एस.बी.टी. हिन्दी साहित्य पुरस्कार प्राप्त साहित्यकार:

(१) **डा.मनु,** श्री. शंकराचार्य वि.विद्यालय, प्रादेशिक विभाग, कोट्टलांडी। डा. मनु का काव्यग्रंथ हम इंतज़ार में नामक कविता संकलन

(२) **डा.मणिकंठन नायर** हिन्दी विभागाध्यक्ष, एम.जी.कोलेज त्रिवेन्द्रम शोध ग्रंथ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के गद्य के राजनैतिक व्यंग्य

(३) **केरल हिन्दी साहित्य अकादमी पुरस्कार - डा.पी.आर.हरीन्द्रशर्मा ,** हिन्दी विभाग, तिरुवनन्तपुरम दूरदर्शन, हिन्दी और कोंकणी संज्ञायें, ग्रंथ को पुरस्कार प्राप्त है।

धर्मराज युधिष्ठिर: आत्मस्वीकृति

डॉ रामसनेही लाल शर्मा यायावर,
फीरोजाबाद २८३२०३

धर्मराज मैं
सत्यनिष्ठ हूँ
आस्था का स्वर
मूर्तिमन्त हूँ
किन्तु
नहीं यह जान सका
कि धर्म भी जड़ होकर
बन जाता है
अवरोध भयंकर
और
निरावृत सत्यप्रकाशित होकर
हरता है नयनों की ज्योति
सत्य सदा पथ दर्शक ही नहीं
बना देता है पथ हारा भी
भटकाता, मन, बुद्धि
चिरन्तन चिन्तन, प्राणों
आत्मा को भी
और
आस्था दृढ़ होकर
बन जाती घोर अनास्था भी है।
अब अतीत मथता है मुझ को
मैं प्रश्नाकुल, व्यथित, व्यग्र
व्याकुल चिन्तित हूँ
वीर्यशुल्क, देकर जीता था
जिस कृष्णा को अर्जुन पार्थ ने
वह भार्या बन गयी सभी की
यह माता की आज्ञा ही थी
सचमुच?
या लोलुपता थीं तन की
मन की भी
कैसा था वह धर्म
खींचकर द्यूतासन तक
जो ले आया?
कैसी थी वह धर्मनिष्ठता
जिसने खुद को
अनुजों को, कृष्णा को
सम्पन्ति बना दिया था?
वह धर्मस्था क्या थी
जिसके चलते
सदा रक्षणीया रजस्वला कृष्णा
डूब रही थी
अनाचार के जानी सागर में?
स्वयं दिशा-निर्देश तेज़ाबी
अन्तर्यामी निर्देश भी
बन धर्म-संस्थापक व माधव
अश्वत्थामा के हत होने का
उद्घोष करूँ, मैं निश्चिन्त
पर जड़ सत्य पकड़कर
बैठा मैं
'नर वा कुंजर' में उलझ गया था
नहीं जानता था कि सदा
भटकन से बाहर आकर ही
जीवन का शाश्वत सत्य
मिलाकरता है।
धर्म वही है
जिससे जीवन रक्षित हो
मानवता हुलसे
हो स्थापित न्यायधरा पर
धर्म सदा गतिशील कर्म है
और सत्य उसका अनुगमी
जीवन में रखना ही
सत्य धर्म है।
यह तब समझा हूँ जब
मेरे साथ नहीं हैं
बन्धु बान्धव
लोभ, मोह, भ्रम
अहंकार, लिप्सा, व्याकुलता
भय, भावुकता
साथ खड़ा है
सिर्फ धर्म ही
अनुगामी बन
और खड़ा हूँ मैं हिमगिरि की
बर्फीली ऊँची चोटी पर
हो निर्लिप्त
निरपेक्ष
तटस्थ
निष्काम
अकम्पित •

प्रणाम

नलिनीकान्त, प.बंगाल-७१३३२१

एक हाथ से
नमन नहीं, सिर्फ
सलाम होता।

दो हाथ जुड़े
मस्तक झुके, तभी
प्रणाम होता।

श्रद्धापूर्वक
पांव छूना, भद्र का
कलाम होता।

जिसको क्रोध
नहीं, मुख उसका
अम्लान होता।

शान्ति व खुशी
जहां, वही असली
मकान होता।

अजातशत्रु
जो, सफल उसीका
प्रयाण होता।

जो है अरूप
अनन्त, उसीका सौ
सौ नाम होता। •

गज़ल

डॉ मोईनुद्दीन शाहीन,

किसने भेजा ख़त गुमनाम
कर डाला मुझको बदनाम
सोच रहा है गंगा राम
यह जीवन है, या संग्राम
ऐसी भाषा मत बोलो
हो जाएगा कत्ले-आम
छूटा जबसे तेरा साथ
खाना-पीना हुआ हराम
भवें तनीं जब अफ़सर की
चपरासी ने किया सलाम
बुश को दुनिया भूल गई
मर कर भी ज़िन्दा सद्दाम
हम भी हिम्मत वाले हैं
सुन ले चरखे नीली फ़ाम
सारे तीरथ देख लिए
आओ चलें अब गंगाधाम
हो गए सबके सब गद्दार
निकल गए जब सारे काम
गिरी गिरी, दीवार गिरी
थाम सके तो जल्दी थाम
नाकारों को बना दिया
रिश्वत रानी ने हुव-काम
'शाही' अपने कर्मों का
देख लिया हमने अंजाम

सुलेमानी मदरसा के पास,
मोहल्ला व्यापारियान,
बीकानेर-३३४००१, राजस्थान

मैं एक तरु

मलयालम कविता-इंदिरा वी.सी.
केरल हिन्दी प्रचार सभा

मैं एक तरु
छायादेनेवाला तरु
दुःख में, छाया ढूँढनेवाले
गरीब पथिकों को अभय देनेवाला
छायादार तरु
मैं हूँ एक छायादार तरु
मेरी छाया रूपी चादर पर
छाया समान गहरी नींद में
तन को ज़रा लिटाने केलिए जगह
ढूँढनेवाले मेरे सहयात्रियों!
यहाँ मैं और मेरी सखियाँ
बुला रही हैं तुम्हें वर्षों से
युग-युगान्तर से

सूर्यताप को आवाहित कर मेरी
आत्मा में समावेश कर उस ऊर्जा को
वापस देते मेरे सहजीवियों को
अमृत समान, जीवश्वास का रूप देकर
इस भू की रक्षा करनेवाले हैं हम
सदा मेरी जड़ थामनेवाली भूमि के
मान की रक्षा करनेवाले हैं हम
ताकि हाथ में हाथ रख एक हो जावें
इस काल गर्भ में नये अंकुर निकल आवें

हम स्नेह तीर पर बैठें
ओंठ से ओंठ मिलाकर, पंखों की
सफाई कर
तप्त मानसों को अमृत देनेवाले
दुःख दूर करनेवाले समीर से रहें
हम इस स्नेह तट पर रहें

अनुवाद-श्रीमती आर.राजपुष्पम पीटर
सचिव, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

३१ वाँ वार्षिक समारोह संपन्न होनेवाला है

२०११ अक्तूबर महीने के अंतिम सप्ताह में

मुख्य विशिष्ट भागीदार :

श्री. पालोड रवि

संस्कृति चेयरमेन एवं केरल असम्ब्ली के सदस्य और राजाराम मोहनराय फाउण्डेशन के सहयोगी

श्री. कुंजिकृष्णन

पूर्व निदेशक, दिल्ली दूरदर्शन

श्री. ओ. राजगोपाल

पूर्व केन्द्रमंत्री

डा. बालमोहन तंपी

पूर्व वी.सी. केरल विश्व विद्यालय

डा.एस. तंकमणि अम्मा

अध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा

श्री. के. राजेन्द्रन

चेयरमेन, यवनिका पब्लिकेशन ट्रस्ट

प्राप्त पुस्तकें:

(१) **झरना –** कन्नड से अनूदित लघु कविताए। कवि जगन हक्कि शिवशंकर। अनुवाद **डा.टी.जी.प्रभाशंकर प्रेमी**, मूल्य १००.००, पृष्ठ १०८, विख्यात कवि की प्रशस्त कविताओं का नामी रचनाकार द्वारा सुन्दर अनुवाद।

(२) **प्रकृति मेरी प्रकृति** - प्रख्यात हिन्दी कवयित्रि **श्रीमती रजनी सिंह**। मूल्य १५०.००, पृष्ठ १२०. । ४५से अधिक कविताओं का मार्मिक चित्रण एवं भाव विभूति संपन्न प्रस्तुत काव्य चषक की कविताएं प्रेमोन्मादिनी मीराबाई की मधुर स्मृति संजोए रहती हैं। एक पठनीय तथा संग्रहणीय कविता संकलन - संपर्क - रजनी विला, डिबाई २०२३०३ (उ.प्र.)

(३) **समकालीन हिन्दी कविता का ताप-मान** - लेखक - **डा.प्रमोद कोवप्रत** - मूल्य २००, पृष्ठ १३५.। उत्तर आधुनिक युग के बहु आयामी मुद्दों को कवि अपनी संवेदना के स्टेथस्कॉप से पहचान पाते हैं। लेखक इस सत्य को महसूस करता है। अपने पठन को आकलित किया है। पता-सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, कालिकट वि.विद्यालय, मलप्पुरम, केरल ६७०३०१

(४) **डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर द्वारा रचित अवतरणिकाएं:** लेखक - **डा.नायर.** मूल्य ३००, पृष्ठ १९२। सन १९६७ से अब तक लिखी गयी ४५ ग्रंथों की अवतरणिकाए पुस्तक रूप में तैयार की गयी है। सुरुचिपूर्ण प्रतिपादन और ग्रंथों का परिचय एवं समीक्षा का एक साथ समाकलन है प्रस्तुत ग्रंथ । संपर्क - केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, लक्ष्मीनगर, पट्टम पोस्ट, त्रिवेन्द्रम ६९५ ००४.

(५) **आधी हकीकत आधा फसाना** - लेखक **डा.बालजीत सिंह** - मूल्य २०० - पृष्ठ १३६। प्रख्यात लेखक अपने जीवन की सत्य घटनाओं पर आधारित रचित संस्मरण है प्रस्तुत ग्रंथ, याने इसे एक आत्मकथा परक ग्रंथ मानता है। अपने मधुर एवं सत्य निष्ठ अनुभवों को सुनाने का बीडा उन्होंने जो उठाया वह वस्तुतः एक योग्य अध्यापक का धर्म प्रतीत होता है। संपर्क - शांतिकुंज ४८३, नई बस्ती, बी-१४, बिजनौ (उ.प्र.) २४६७०१

(६) **बंद आँखों का समाज (लघुकथा संग्रह) - संतोष सुपेकर** - मूल्य १५० - पृष्ठ १४०। सूक्ष्म भावबोध से संपन्न कहानीकार अपने आसपास के जीवन को चित्रित करना अपना दायित्व समझता है। पढ़नेवाला पढ़कर जीवनोन्मुखी होने में आकर्षित होगा। श्री संतोष कुमार की कहानियाँ इसके प्रमाण हैं। संपर्क - ३१, सुदाना नगर, उज्जैन (म.प्र)

(७) **धर्मम शरणम गच्छामि - के. रामनपिल्लै (**आत्मकथा, मूल्य २७० - पृष्ठ ३९६। अपने जीवन की खुले तौर तर सारी अनोखी घटनाएं आत्मकथाकार ने प्रस्तुत आत्मकथा में वर्णित की है। एक मार्मिक आत्मकथा है जो केरल के राष्ट्रीय जीवन को उत्तेजित करनेवाली है। एवं तद्धारा श्री. रामनपिल्लै जी अपने व्यस्त जीवन को सफल बना सके हैं। पठनीय एवं संग्रहणी सुन्दर ग्रंथ है। संपर्क - हरिकृष्णन्स, युवतारा गार्डन, कुरवनकोणम, त्रिवेन्द्रम-३

एक कर्मयोगी की आत्मकथा –भारत स्वतंत्रता के रास्ते से

(डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर की आत्मकथा)

हिन्दी जगत में यह आत्मकथा अतुल्य और अत्यंत प्रेरक एवं उद्बोधक है। विपन्न दशा में रुकी शिक्षागति को आत्मबल और कठोर प्रयत्न से पी.एच.डी. की उपाधि तक पहुंचाया और प्रथम श्रेणी के प्रोफसर बने, विश्व साहित्यकारों में नाम कमाया, ६० ग्रंथों के निर्माता एवं बहुचर्चित बहु सम्मानित हुए। सात नेशनल पुरस्कारों और ६० अन्य पुरस्कारों से भूषित हुए। यु.जी.सी. के मेजर रिसेर्च फेलो और उसके एमिरिटस प्रोफसर बने। केंद्र सरकार के १५ मंत्रालयों में हिन्दी सलाहकार रहे, बहुभाषापंडित और २५० से ज्यादा सम्मेलनों के उद्घाटक अथवा सभापति बने। देश-विदेशों के पचास से अधिक हू-ईस-हु में चर्चित इस अनोखे व्यक्तित्व को जानना प्रेरणादायक है ही। युवकों को मार्ग निर्देश देनेवाला एकमात्र आत्मकथा ग्रंथ हिन्दी (५००) और मलयालम (४००) में। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी में दोनों ३००, ३०० में मिलेंगे। आप पर सात शोध ग्रंथ निकले हैं। अब भी वि.विद्यालयों में शोधकार्य चलता है। शोध-छात्रों को आपके ग्रंथ आधे मूल्य पर मिलेंगे।

हिन्दी काव्य का एक नवीन अभिव्यक्ति

मूल्य १३४ , पृष्ठ १३६

लेखक - देवराजकाला

१३४ लघुकविताओं का सुन्दर प्रकाशन

डा.पंकज जैसे अनेक श्रेष्ठ साहित्यकारों की प्रशंसा

संपर्क - साहित्य संगम पछवाद्न, विकास नगर, २४८१९८ देहरादून में प्राप्त।

हाशिये का आदमी

६३ मनोहर मधुर कहानियों का सुरुचिपूर्ण संग्रह

मूल्य ८०, पृष्ठ ६४

कहानीकार - संतोष सुपेकर, ३१, सुदामानगर, उजैन ४५६००

भूमिकाकार - वरिष्ठ साहित्य मनीषी एवं प्राध्यापक वि.विद्यालय

यह संग्रह बहुत सी उम्मीदें लगाता है।

संपर्क - एफ-२/२७, विश्वविद्यालय परिसर उज्जैन (म.प्र.)

स्टेट बैंक फ्रीडम freedoM
आपका मोबाइल आपका बैंक
State Bank freedoM
Fund transfer
Enquiry services
Mobile top up
Bill pay
गो मोबाइल !
बन जाइए मोबाइल !
स्टेट बैंक
मोबाइल बैंकिंग सेवाओं के साथ
आपको मिलेगी
अपने मोबाइल फोन पर
बैंकिंग सेवाओं की एक पूरी श्रृंखला.
मोबाइल बैंकिंग सेवाओं का
लाभ उठाने के लिए,
कृपया अपने निकटतम शाखा से
संपर्क करें अथवा यह वेबसाइट देखें
http://www.statebankoftravancore.com/new/mobilebanking.htm
निधि अंतरण । पूछताछ सेवाएँ । चेक बुक अनुरोध । मोबाइल टॉप अप । बिल का भुगतान
SBT
स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर
प्रधान कार्यालय : पूजपुरा तिरुवनन्तपुरम
1800 425 5566 I www.statebankoftravancore.com

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायरजी को स्नेहांजलि पुरस्कार

केरल कलचरल फारम और यवनिका पब्लिकेशन ट्रस्ट के तत्वावधान में
सत्यन मेमोरियल हॉल में २२ अक्तूबर २०११ को

कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि : **श्री. पालोड रवि** (एम.एल.ए.)
श्री.आर. रामचन्द्रन नायर आई.ए.एस (पूर्व वी.सी. और पूर चीफ सेक्रेटरि)
डॉ.एस.तंकमणि अम्मा (सिन्डिकेट की सदस्या)
श्री.के.राजेन्द्रन, श्री.पी.मनोहरन, श्री.वासुदेवन, श्रीमती कौसल्या अम्माल

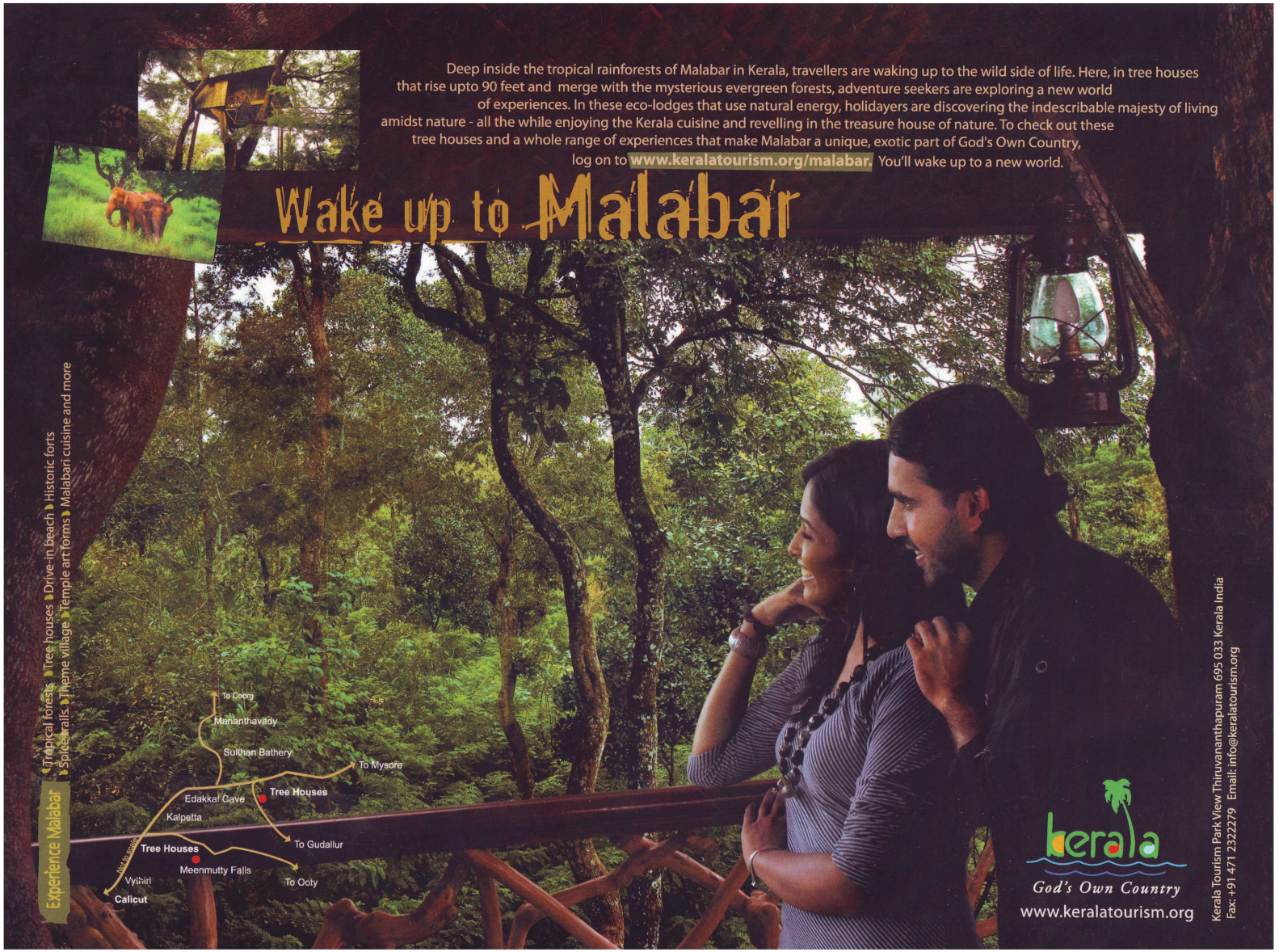
Deep inside the tropical rainforests of Malabar in Kerala, travellers are waking up to the wild side of life. Here, in tree houses that rise upto 90 feet and merge with the mysterious evergreen forests, adventure seekers are exploring a new world of experiences. In these eco-lodges that use natural energy, holidayers are discovering the indescribable majesty of living amidst nature - all the while enjoying the Kerala cuisine and revelling in the treasure house of nature. To check out these tree houses and a whole range of experiences that make Malabar a unique, exotic part of God's Own Country, log on to www.keralatourism.org/malabar. You'll wake up to a new world.
Wake up to Malabar
Experience Malabar
Tropical forests
Tree houses
Drive-in beach
Historic forts
Spice trails
Theme village
Temple art forms
Malabari cuisine and more
To Coorg
Manantavady
Sulthan Bathery
To Mysore
Edakkal Cave
Tree Houses
Kalpetta
To Gudallur
Tree Houses
Meenmutty Falls
To Ooty
Vythiri
Calicut
kerala
God's Own Country
www.keralatourism.org
Kerala Tourism Park View Thiruvananthapuram 695 033 Kerala India
Fax: +91 471 2322279 Email: info@keralatourism.org

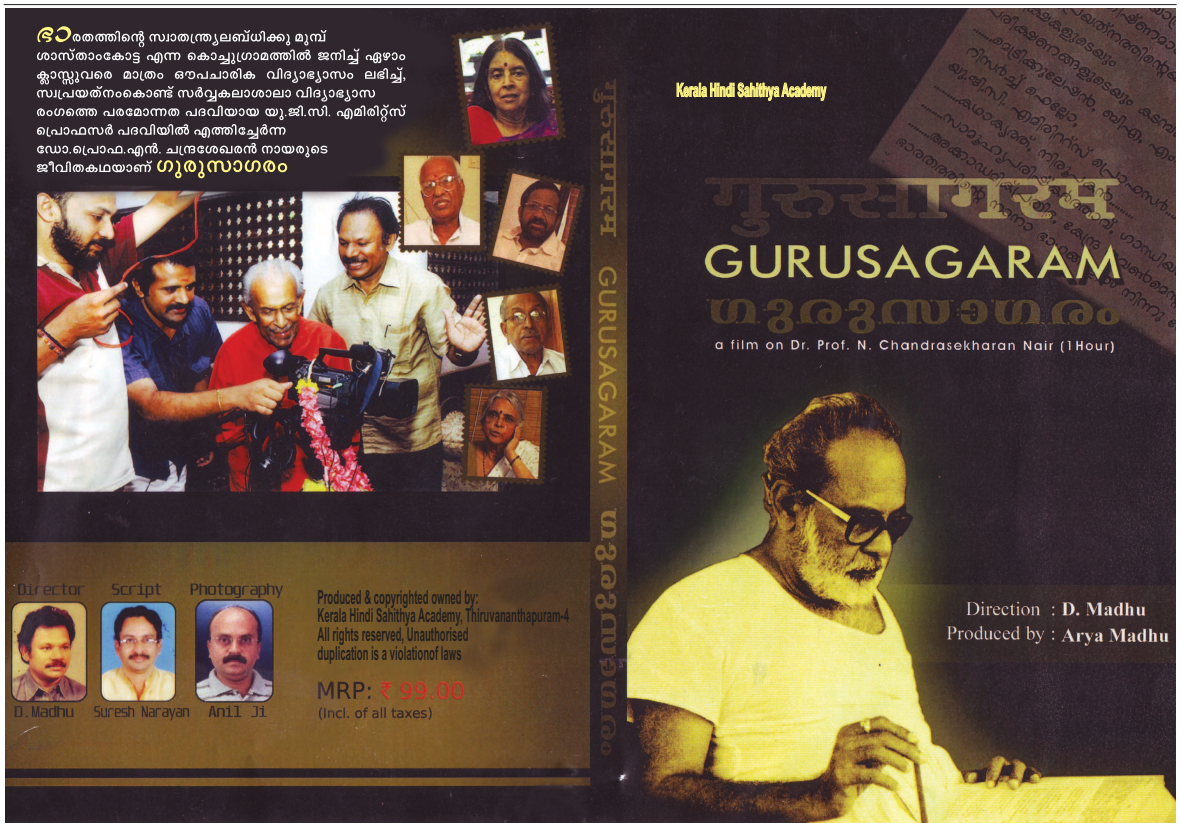

डॉ. चन्द्रशेखरन नायर और श्री. रमा उण्णित्तान

कोच्चिन में प्रख्यात जज श्री.कृष्णय्यर डॉ चन्द्रशेखरन नायर की हिन्दी आत्मकथा का प्रकाशन कर रहे है।

डॉ.ए.पी. मजीदखान (चेयरमेन, नूरुल इस्लाम ग्रूप)

निरंतर प्रयत्न से ही विजय तक पहुँच सकता है। इस एकतान यात्रा के बीच विश्राम के लिए गुंजाइश नहीं। आज विश्राम, कल काम, यह नियम कभी नहीं होना है। उलटा, आज परिश्रम कल विश्राम यही विजय साक्षात्कार का मार्ग है। महान पुरुषों की यही जीवन-चर्या है। अविराम प्रयास हो उनका धन है।

सम्पादक-निरुमन्यूस, (कलेजा संरक्षण केलिए पहला हथान, दक्षिण में, निम्स मेडिसिट्टि)

डा.एम.एस.फैसलखान, प्रो.वाइसचान्सलेर, नूरुल इस्लाम विश्व विद्यालय

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के लिए शोध-पत्रिका डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर, श्री निकेतन, तिरुवनन्तपुरम - ४
द्वारा मुद्रित संपादित और श्रीरामदासमिशन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, तिरुवनन्तपुरम-८७ में मुद्रित।